योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), बेसिक शिक्षा

मार्च-अप्रैल, संयुक्तांक-2021

प्रेरणा

बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश
की मासिक पत्रिका

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

वर्ष 2 | तृतीय अंक

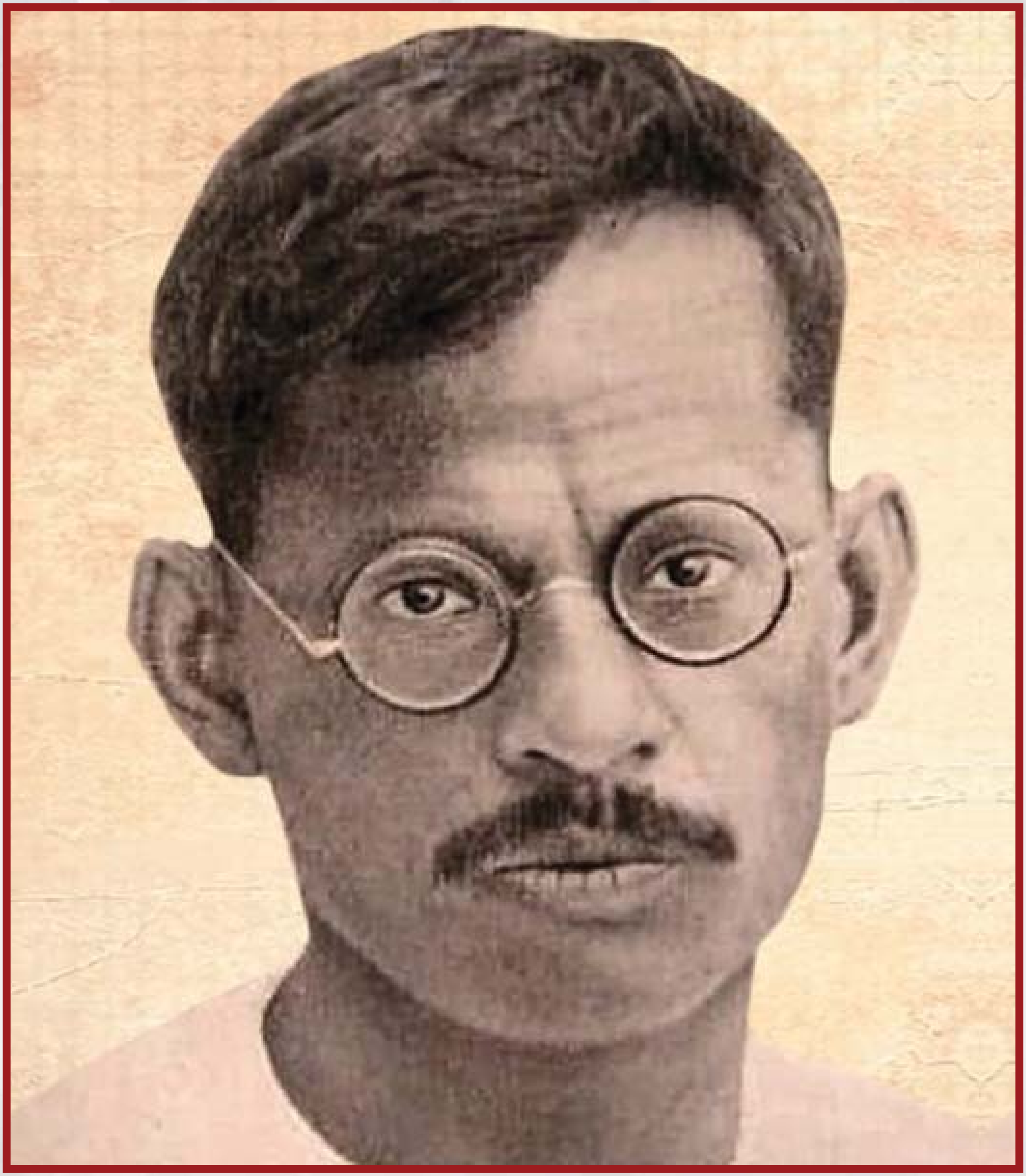

गणेश शंकर विद्यार्थी

26 अक्टूबर, 1890 – 25 मार्च, 1931

बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश की मासिक पत्रिका

प्रेरणा

वर्ष 2 | तृतीय अंक | मार्च-अप्रैल, संयुक्तांक-2021

बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश

विद्या भवन, निशातगंज, लखनऊ

ईमेल : prernapatrikabasicedu@gmail.com

फोन नं. : 0522-2780391

संरक्षक
डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी
मा. राज्य मंत्री, (स्वतंत्र प्रभार)
बेसिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश

सह संरक्षक
श्रीमती रेणुका कुमार
आई.ए.एस.
अपर मुख्य सचिव, बेसिक शिक्षा,
उत्तर प्रदेश शासन

निर्देशन
श्री विजय किरन आनन्द
आई.ए.एस.
महानिदेशक
स्कूल शिक्षा, उत्तर प्रदेश

प्रधान सम्पादक
डॉ. सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह
शिक्षा निदेशक (बेसिक)
उत्तर प्रदेश

नोडल अधिकारी,
श्री राजेश कुमार शाही
मध्यान्ह भोजन प्राधिकरण

सम्पादक
डॉ. के.बी. त्रिवेदी

सम्पादक मण्डल

1. निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., उ.प्र. लखनऊ
2. निदेशक साक्षरता, साक्षरता निदेशालय, उ.प्र. लखनऊ
3. श्री मुमताज अहमद, वित्त नियन्त्रक म.भो.प्रा., उ.प्र. लखनऊ
4. डॉ. पवन कुमार सचान, प्राचार्य डायट, लखनऊ
5. श्री गुरमिन्दर सिंह, सलाहकार समग्र शिक्षा अभियान, लखनऊ

प्रेरणा पत्रिका प्रकाशन सामग्री संकलन समिति

1. श्रीमती दीपा तिवारी, सहायक निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., लखनऊ – अध्यक्ष
2. श्री राजेश कुमार शाही, म.भो.प्रा., उ.प्र. लखनऊ – सदस्य
3. श्री गुरमिन्दर सिंह, सलाहकार, समग्र शिक्षा अभियान लखनऊ – सदस्य
4. श्री बाल गोबिन्द मौर्य, वरिष्ठ प्रवक्ता डायट लखनऊ – सदस्य
5. श्रीमती पूनम उपाध्याय, प्रवक्ता डायट, लखनऊ – सदस्य

प्रेरणा पत्रिका के वितरण सम्बन्धी समिति

1. श्री अब्दुल मुबीन, सहायक निदेशक, बेसिक शिक्षा निदेशालय लखनऊ – अध्यक्ष
2. श्री संजय कुमार शुक्ल, प्रशासनिक अधिकारी, समग्र शिक्षा अभियान लखनऊ – सदस्य
3. श्रीमती पुष्पा रंजन, प्रशासनिक अधिकारी, एस.सी.ई.आर.टी. लखनऊ – सदस्य

टंकण सहयोग

1. श्री संजय कुमार, कम्प्यूटर आपरेटर, म.भो.प्रा., लखनऊ
2. कु. दिव्यांशी दीक्षित, कम्प्यूटर आपरेटर, म.भो.प्रा., लखनऊ

विषय–सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	मा. मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश, योगी आदित्यनाथ द्वारा बेसिक शिक्षा विभाग में नवनियुक्त खण्ड शिक्षा अधिकारियों को नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम	05
2.	बेसिक शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी द्वारा प्रेरणा ज्ञानोत्सव का शुभारम्भ	07
3.	प्रेरणा ज्ञानोत्सव में शिक्षिका माला राय द्वारा टी.एल.एम. मैजिक बोर्ड का प्रदर्शन	09
4.	सुहानी सुबह (कविता)	09
5.	ऑपरेशन कायाकल्प के नये आयाम (विद्यालयों की बदलती तस्वीर)	10
6.	विद्यालय जहाँ अंग्रेजी माध्यम से बच्चे शिक्षित हो रहे हैं (राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक)	14
7.	छात्रों ने जीती मण्डलीय अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता (राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक)	16
8.	छात्रों को आदर्श नागरिक बनाने की मुहिम (राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक)	17
9.	शून्य से शिखर की ओर (राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक)	18
10.	तितली रानी (कविता)	19
11.	बच्चों को बाल मजदूरी से मुक्त कराकर विद्यालय में प्रवेश दिलाया (राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षिका)	20
12.	पिछड़े क्षेत्र का विद्यालय बना जनपद का सर्वोत्तम विद्यालय (राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक)	22
13.	उच्च गुणवत्ता के लियेः प्री प्राइमरी कक्षा एक नई शुरूआत (आई.सी.टी. अध्यापक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षिका)	24
14.	शैक्षणिक कौशल ने दिलाया सम्मान (राज्य स्तर पर सम्मानित शिक्षिका)	25
15.	साधन विहीन विद्यालय बना जनपद का उत्कृष्ट विद्यालय (आपरेशन कायाकल्प से बदली तस्वीर)	26
16.	एक सरकारी स्कूल : तब और अब (आपरेशन कायाकल्प से बदली तस्वीर)	28
17.	लला तुम मत जाओ, तुमने विद्यालय को नयी पहचान दिलाई (आदर्श अध्यापक श्री अभिषेक कुमार)	29
18.	''अस्तित्व'' (कविता)	29
19.	छात्रों की प्रतिभा देख अभिभूत हुए नीति आयोग के उपाध्यक्ष (कम्पोजिट विद्यालय कुण्डासर, जनपद–बहराइच)	30
20.	मध्यान्ह भोजन योजना (कोरोना काल में भी बच्चों के पोषण की व्यवस्था)	31
21.	मोबाइल ऐप के प्रयोग से शिक्षण को सहज और रूचिकर बनायें	32
22.	ऑनलाइन शिक्षण : रूचि से ज्ञान तक...........''	34
23.	गणित विषय में छात्रों की अरूचि कारण और निवारण	36
24.	कोरोना और विद्यालय (कविता)	37
25.	समावेशी शिक्षा	38
26.	किलकारी (पुस्तक समीक्षा)	40
27.	शिक्षा की ओर बढ़ते दिव्यांगो के कदम	41
28.	खामोश सा अफसाना (कविता)	42
29.	Me and My Students During Covid–19	45

सम्पादकीय

उत्तर प्रदेश का प्राथमिक शिक्षा विभाग प्रदेश का ही नहीं देश का सबसे विशाल संगठन है जहाँ 1.8 करोड़ छात्र–छात्राओं को शिक्षित करने के लिये 5.75 लाख शिक्षक और शिक्षा मित्र तैनात हैं। बेसिक शिक्षा को समर्पित यह विभाग विशेष परिवर्तन के दौर से निकलकर नये कलेवर में प्राथमिक शिक्षा को नई ऊँचाई और पहचान दिलाने की ओर अग्रसर है। प्रदेश की बेसिक शिक्षा नित्य नये प्रतिमान स्थापित करने का सफल प्रयास कर रही है। विगत एक वर्ष में कोरोना के बावजूद उपलब्धियों के कीर्तिमान स्थापित हुये हैं। विद्यालयों में ऑपरेशन कायाल्प की सहायता से ढांचागत और भौतिक सुविधाओं का विकास, शिक्षा और शिक्षण में नवोन्मेषी प्रयोग तथा विद्यालयों के प्रबन्धन में अनेक सकारात्मक परिवर्तन हुये हैं। हमारे विद्यालयों में उपलब्ध भौतिक सुविधायें कहीं–कहीं पब्लिक स्कूलों को भी मात दे रही हैं। जन मानस भी इन विद्यालयों की ओर आशाभरी नजरों से देख रहा है। शायद भविष्य के भारत की तकदीर इन्हीं विद्या मन्दिरों से गढ़ी जायेगी।

विगत मार्च के प्रथम सप्ताह में बड़े उत्साह से प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षण कार्य का शुभारम्भ किया गया। इस शुभ अवसर पर विद्यार्थियों और शिक्षकों के उत्साहवर्धन हेतु माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और शिक्षा राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी ने भी विद्यालयों का भ्रमण किया। अभी विद्यालयों में शिक्षण कार्य शुरू ही हुआ था कि क्रूर कोरोना की दूसरी लहर ने विभाग की इस कोशिश पर पानी फेर दिया। नियति को तो कुछ और ही मंजूर था, विद्यालयों को एक बार फिर अनिश्चित काल के लिये बन्द करना पड़ा। इस प्राकृतिक आपदा के बावजूद हम अपने उत्साही शिक्षकों की मदद से छात्र–छात्राओं की शिक्षण प्रक्रिया पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़ने देने के लिये कृत संकल्प हैं। हम इस कोरोना काल में विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के प्रयास करते रहेगें। विद्यालयों में पंजीकृत छात्र–छात्राओं और उनके अभिभावकों के स्वास्थ्य की मंगल कामनाओं के साथ हमारे शिक्षक उनसे व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने की कोशिश जारी रखेगें। इस कठिन दौर में छात्रों को व्हाट्सएप ग्रुप, यू–ट्यूब, फेसबुक और दूरदर्शन के शैक्षिक प्रसारण के माध्यम से शिक्षित करने और उन्हें कोरोना से बचाव के तौर तरीके भी बताने का कार्य किया जाता रहेगा। विभाग के कुछ संवेदनशील शिक्षक और शिक्षिकायें इस मुश्किल दौर में कोरोना वारियर्स के रूप में कार्य करते हुये लोगों को मास्क और दवायें भी उपलब्ध करा रहे हैं।

कोरोना की इस दूसरी लहर में हमने अपने बेसिक शिक्षा परिवार के कई कर्मठ साथियों को खोया है। हम उन सभी पुण्य आत्माओं को हृदय से याद कर अपनी श्रद्धांजली अर्पित करते हुये विभाग में उनके योगदान पर गर्व का अनुभव कर रहा हूँ। बेसिक शिक्षा विभाग उनके परिवार पर आये इस असामयिक संकट पर उनके साथ है।

प्राथमिक शिक्षा की बदलती तस्वीर का दस्तावेजी प्रमाण मासिक पत्रिका ''प्रेरणा'' का मार्च–अप्रैल, 2021 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। प्रेरणा पत्रिका का यह अंक अपने अतीत और वर्तमान की अब तक उपलब्धियों का एक पुनरावलोकन भी है। हम बेसिक शिक्षा विभाग के उन समस्त सहयोगियों का आभार भी व्यक्त करता हूँ जो पत्रिका को उत्कृष्ट बनाने में अपना योगदान दे रहे हैं।

आशा है कि प्रेरणा पत्रिका का यह अंक प्रदेश को बेसिक शिक्षा की गुणवत्ता में श्री वृद्धि के साथ प्रदेश को प्रेरक प्रदेश बनाने का मार्ग प्रशस्त करेगा।

(डॉ. सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह)
शिक्षा निदेशक (बेसिक)
प्रधान सम्पादक

मा. मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश योगी आदित्यनाथ द्वारा बेसिक शिक्षा विभाग में नवनियुक्त खण्ड शिक्षा अधिकारियों को नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम

विगत 13 मार्च, 2021 दिन शनिवार को लोक भवन में आयोजित कार्यक्रम में माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा 271 नव चयनित खण्ड शिक्षा अधिकारियों में से 10 अधिकारियों को साँकेतिक रूप से नियुक्ति पत्र वितरित किया गया। नियुक्ति पत्र वितरित करते हुये मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2017 से अब तक चार साल में चार लाख सरकारी पदों पर नियुक्तियाँ हुयी हैं। इन नियुक्तियों में अकेले बेसिक शिक्षा परिषद में 1 लाख 20 हजार नियुक्तियाँ की गयी हैं।

मुख्यमंत्री ने बेसिक शिक्षा विभाग के विद्यालयों में ढ़ांचागत सुविधाओं के विकास के लिये चलाये जा रहे ऑपरेशनल कायाकल्प, 54 लाख नये बच्चों का स्कूलों में प्रवेश और स्मार्ट क्लास जैसी सुविधाओं को विभाग की बड़ी उपलब्धि बताया। कार्यक्रम को बेसिक शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी ने भी सम्बोधित किया। कार्यक्रम में सुरक्षा–संरक्षा पैकेज, दिव्याँग बच्चों के लिये कोर्स और दीक्षा हैण्डबुक का विमोचन किया गया। इसी कार्यक्रम में डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं के लिये ऑनलाइन कोर्स का भी शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम में अपर मुख्य सचिव श्रीमती रेणुका कुमार, महानिदेशक स्कूल शिक्षा श्री विजय किरन आनन्द और निदेशक बेसिक शिक्षा डॉ. सर्वेन्द्र विक्रम सिंह भी उपस्थित रहे।

बेसिक शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी द्वारा प्रेरणा ज्ञानोत्सव का शुभारम्भ

मिशन प्रेरणा के अन्तर्गत विगत 17 मार्च, 2021 को एस.एम.एस. कॉलेज, गोसाईगंज, लखनऊ के प्रांगण में बेसिक शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर प्रेरणा ज्ञानोत्सव का शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्र, अभिभावक और शिक्षक उपस्थित रहे। अपने उद्बोधन में कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी ने कहा कि कोविड के कारण विद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों की शिक्षा पर जो प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है इस 1 मार्च से 100 दिनों तक चलने वाले प्रेरणा ज्ञानोत्सव में उसकी भरपायी की जायेगी। प्रेरणा लक्ष्य प्राप्त करने के लिये हम सभी को मिलकर कार्य करना होगा। कार्यक्रम में प्रेरक छात्रों, उनके अभिभावकों और शिक्षकों को मुख्य अतिथि द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कुछ स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा विद्यालयों में स्मार्ट क्लास स्थापित करने के लिये एल.ई.डी., टी.वी. प्रदान किये गये।

बेसिक शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी द्वारा प्रेरक छात्रा दिव्यांशी रावत को सम्मानित किया गया

मिशन प्रेरणा के अन्तर्गत दिनांक 17 मार्च, 2021 को विकास खण्ड–गोसाईगंज, लखनऊ में आयोजित प्रेरणा ज्ञानोत्सव समारोह में माननीय बेसिक शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी ने अपने कर कमलों से प्राथमिक विद्यालय–सलौली, ब्लाक–गोसाईगंज, लखनऊ की बुनियादी अधिगम कौशल में दक्ष कक्षा–05 की छात्रा दिव्यांशी रावत को प्रथम प्रेरक बालिका के रूप में प्रमाण पत्र स्मृति चिन्ह व पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया। दिव्यांशी सामान्य ज्ञान, पाठ्य सहगामी क्रियाओं एवं खेलकूद (खो–खो) में दक्ष है तथा उसे 40 तक का पहाड़ा कंठस्थ है। प्रेरणा ज्ञानोत्सव समारोह में दिव्यांशी ने मात्र 18 सेकेण्ड में उत्तर प्रदेश के समस्त 75 जनपदों के नाम एवं मात्र 22 सकेण्ड में भारत के समस्त राज्यों के नाम व उनकी राजधानियों के नाम माननीय मंत्री जी के समक्ष सुनाया। दिव्यांशी रावत एक प्रतिभाशाली छात्रा है। दिव्यांशी के पिता दैनिक मजदूरी कर परिवार का पालन–पोषण करते हैं और उसकी माँ ग्रहणी है। उसके माता–पिता पढ़–लिखे नहीं है, फिर भी अपनी दोनों बेटियों को समुचित शिक्षा दिलाने हेतु दृढ़ संकल्पित है। माननीय मंत्री जी द्वारा छात्रा दिव्यांशी को हार्दिक बधाई देते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकानायें व्यक्त की गयी। ❑

प्रेरणा ज्ञानोत्सव कार्यक्रम में अभिभावकों को भी सम्मानित किया गया

प्रेरणा ज्ञानोत्सव में शिक्षिका माला राय द्वारा टी.एल.एम. मैजिक बोर्ड का प्रदर्शन

प्रेरणा ज्ञानोत्सव में शिक्षकों द्वारा तैयार किये गये टी.एल.एम. (टीचिंग लर्निंग मैटीरियल) की प्रदर्शनी लगायी गयी। माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. सतीश चन्द्र द्विवेदी ने शिक्षकों द्वारा तैयार किये गये टी.एल.एम. को देखा और उनकी सराहना की। टी.एल.एम. प्रदर्शनी में श्रीमती माला राय सहायक अध्यापिका प्राथमिक विद्यालय, शेखनापुर धार, ने टी.एल.एम. मैजिक बोर्ड का प्रदर्शन किया। उन्होंने कक्षा 3, 4, 5 के बच्चों को गणित पढ़ाने के लिये एक टी.एल. एम. का निर्माण किया है जिसका नाम मैजिक बोर्ड है। इस बोर्ड पर 1–100 तक संख्यायें लिखी होती हैं जिसके माध्यम से बच्चों को पूर्ववर्तो अनुवर्ती संख्या, सम–विषम संख्या, आरोही अवरोही क्रम, अभाज्य संख्या, लघुतम समापवर्त्य तथा मैजिक स्क्वायर सिखाया जा सकता है। इस टी.एल.एम. की माननीय शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) ने सराहना की और इसे अन्य विद्यालयों के लिए उपयोगी बताया।

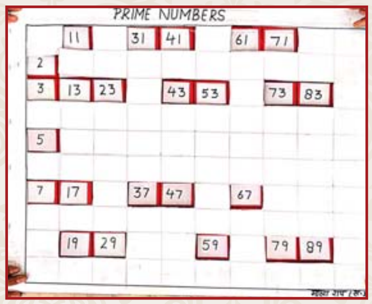

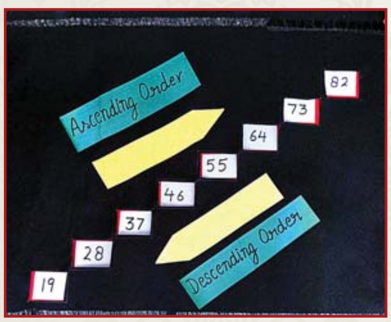

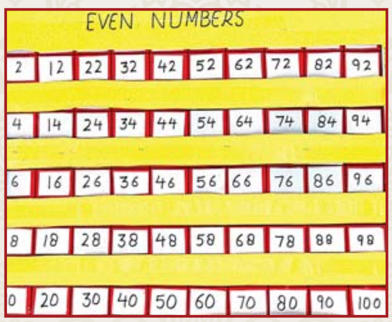

बाल कविता

सुहानी सुबह

नवल प्रात की नई किरण ने,
छटा विकट फहराई,
दूर हो गया तम तुरंत ही,
नई सुबह है आई।

नन्ही नन्ही चिड़ियां चहकीं,
और चहकते बच्चे,
चींचीं करके दाना मांगे
सबको लगते अच्छे।

फुदक फुदक कर प्यारी कोयल,
मीठे स्वर में गाती,
झट उठ जाओ प्यारी गुड़िया,
सही बात समझाती

कुल्ला मंजन करके गुड़िया
झट पट नाश्ता खा लो,
हम भी दाना मांग रहे है,
हमको भी तो डालो।

कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव
राव गंज कालपी,
जालौन

ऑपरेशन कायाकल्प के नये आयाम

(विद्यालयों की बदलती तस्वीर)

विद्यालयों के शैक्षणिक परिवेश के विकास में विद्यालयों की अवस्थापनात्मक सुविधाओं की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। इन विद्यालयों में मूलभूत अवस्थापना सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण एवं विकास हेतु मा. मुख्यमंत्री जी द्वारा जून, 2018 में ''ऑपरेशन कायाकल्प'' का शुभारम्भ किया गया था। जिसके अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों में प्राथमिकता के आधार पर मूलभूत अवस्थापनात्मक सुविधाओं को बाल मैत्रिक अभिगम्यता एवं दिव्यांग सुलभता की दृष्टि से सृजित एवं विकसित किये जाने का कार्य युद्ध स्तर पर गतिमान है। ऑपरेशन कायाकल्प का मुख्य उद्देश्य प्रदेश के लगभग 1.33 लाख परिषदीय विद्यालयों में अध्ययनरत् लगभग 1.8 करोड़ बच्चों को आधुनिक परिवेश के साथ–साथ एक स्वच्छ, आकर्षक एवं सुरक्षित शैक्षणिक माहौल में अध्ययन का अवसर उपलब्ध कराना है।

ऑपरेशन कायाकल्प को धरातल पर क्रियान्वित किये जाने के उद्देश्य से निम्न गतिविधियों एवं रणनीतियों को प्राथमिकता के आधार पर अपनाया गया है :–

क्र.सं.	अवस्थापना सुविधा
1	शुद्ध एवं सुरक्षित पेयजल
2	बालक शौचालय
3	बालिका शौचालय
4	शौचालय/मूत्रालय में नल–जल आपूर्ति
5	शौचालय/मूत्रालय का टाइलीकरण
6	दिव्यांग सुलभ शौचालय
7	मल्टीपल हैन्ड वॉशिंग यूनिट
8	कक्षा–कक्षा की फर्श का टाइलीकरण
9	श्यामपट्ट
10	रसोईघर
11	विद्यालय की समुचित रंगाई–पुताई
12	विद्यालय परिसर में दिव्यांग सुलभ रैम्प एवं रेलिंग
13	कक्षा–कक्षा में उपयुक्त वायरिंग एवं विद्युत उपकरण
14	विद्यालय का विद्युत संयोजन
15	बालक मूत्रालय
16	बालिका मूत्रालय
17	फर्नीचर एवं डेस्क–बैंच
18	विद्यालय परिसर में फोर्सलिफ्ट अथवा सबमर्सिबल से नल–जल आपूर्ति
19	सुरक्षित चहारदीवारी के साथ मुख्य गेट

समयबद्ध लक्ष्य निर्धारण :– प्रदेश के समस्त परिषदीय विद्यालयों को निम्न 19 मूलभूत अवस्थापना सुविधाओं को चरणबद्ध रूप से संतृप्त किये जाने हेतु मार्च, 2022 का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

अनुश्रवण एवं मूल्यांकन :– प्रत्येक परिषदीय विद्यालय में अवस्थापना सुविधाओं की रियल टाइम मॉनीटरिंग के उद्देश्य से प्रत्येक छमाही जियो टैग आधारित थर्ड पार्टी स्वतन्त्र मूल्यांकन एवं प्रत्येक माह अध्यापकों द्वारा विद्यालय का स्वमूल्यांकन किया जा रहा है।

तकनीकी मैन्युअल :– प्रत्येक विद्यालय, ग्राम पंचायत एवं विभिन्न कार्यदायी संस्थाओं द्वारा विद्यालय में बाल मैत्रिक एवं दिव्यांग सुलभ अवस्थापना सुविधाओं के निर्माण/मरम्मत के साथ रख–रखाव हेतु 03 लाख से अधिक टैक्निकल मैन्युल को वितरित कराया गया है।

वित्त पोषण एवं अन्तर्विभागीय समन्वय :– परिषदीय विद्यालयों में मूलभूत अवस्थापना सुविधाओं के सृजन एवं जीर्णोद्धार हेतु राज्य सरकार द्वारा विभिन्न वित्तीय स्रोतों यथा–समग्र शिक्षा, ग्राम पंचायत निधि, जिला खनिज निधि, स्मार्ट सिटी फण्ड, केन्द्रीय वित्त आयोग, राज्य वित्त आयोग, अवस्थापना विकास निधि इत्यादि में अतिरिक्त धनराशि उपलब्ध कराते हुये अन्तर्विभागीय समन्वय के साथ क्रियान्वित किया जा रहा है।

प्रशिक्षण एवं क्षमता संवर्द्धन :– विद्यालयों में बाल सुलभ एवं दिव्यांग अभिगम्यता अनुरूप निर्माण हेतु लगभग 3 लाख से अधिक राज मिस्त्रियों, अध्यापको, प्रधानों, सचिवों इत्यादि को विभिन्न प्रशिक्षण माध्यमों यथा–क्लासरूम ट्रेनिंग, ऑनसाइट ट्रेनिंग, ऑनलाइन ट्रेनिंग इत्यादि के माध्यम से प्रशिक्षित किया गया है एवं समय–समय पर विभिन्न नवाचारों एवं तकनीकों से निरन्तर अवगत कराया जा रहा है।

समर्पित कॉल सेन्टर :– प्रत्येक विद्यालय में अवस्थापना सुविधाओं के विकास एवं कार्यों की प्रगति की निरन्तर समीक्षा हेतु प्रदेश के प्रत्येक जनपद में एवं प्रत्येक विकासखण्ड में एक समर्पित कॉल सेन्टर स्थापित किया गया है, जिसके माध्यम से प्रतिदिन की प्रगति रिपोर्ट के आधार पर प्रत्येक स्तर पर निरन्तर समीक्षा की जा रही है।

प्रेरणा पोर्टल एवं डैशबोर्ड :– अवस्थापना सुविधाओं के विकास में पूर्ण पारदर्शिता एवं लक्ष्यों के सापेक्ष प्रगति की समीक्षा हेतु प्रत्येक स्तर यथा–राज्य स्तर, मण्डल स्तर, जनपद स्तर और विकासखण्ड स्तर हेतु प्रेरणा पोर्टल एवं डैशबोर्ड निर्मित किया गया है, जिसके अन्तर्गत 'ऑपरेशन कायाकल्प' की प्रगति का सूक्ष्म विश्लेषण करते हुये रिपोर्ट तैयार की जाती है।

''मेरा विद्यालय–स्वच्छ विद्यालय'' :– परिषदीय विद्यालया में ''मेरा विद्यालय–स्वच्छ विद्यालय'' की अवधारणा को लागू किया गया है, जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यालयों में सृजित की गयी अवस्थापना सुविधाओं के रख–रखाव एवं स्वच्छता की निरन्तरता को बनाये रखने में विद्यार्थियों के साथ अध्यापकों की भी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की जा रही है।

परिणाम :– आज प्रदेश के 80 हजार से अधिक परिषदीय विद्यालयों में 14 अनिवार्य मूलभूत सुविघाओं में से 12 व 13 अवस्थापना सुविधाओं का आच्छादन पूर्ण हो चुका है।

जियो टैग आधारित मार्च 2021 में थर्ड पार्टी स्वतंत्र मूल्यांकन के अन्तर्गत सभी 75 जिलों में कुल 158895 स्कूलों का स्वतंत्र मूल्यांकन कराया गया। स्वतंत्र मूल्यांकन में कुल 18 पैरामीटर पर सर्वेक्षण कराया गया था, जिसमें प्रथम से लेकर दसवें स्थान तक क्रमशः वाराणसी, गाजियाबाद, हापुड़, मेरठ, इटावा, बरेली, लखीमपुर, हमीरपुर, अम्बेडकर नगर और फिरोजाबाद जिले रहे।

कुछ विद्यालयों में आपरेशन कायाकल्प के अन्तर्गत अनुकरणीय कार्य किया गया है। ❑

सौजन्य से–
राजीव नयन गुप्ता
व
रवि शर्मा
सलाहकार, निर्माण समग्र शिक्षा

पाठकों एवं लेखकों से एक विनम्र निवेदन

कोई भी पत्रिका पाठकों के अमूल्य और रचनात्मक सुझावों से निरन्तर परिमार्जित और समृद्ध होती है। प्रेरणा पत्रिका के समस्त पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि वे पत्रिका को और उपयोगी बनाने के लिए अपने सुझाव **prernapatrikabasicedu@gmail.com** पर भेजने की कृपा करें।

पत्रिका को अपने बहुमूल्य आलेखों और रचनाओं से गरिमामय बनाने वाले लेखकों और रचनाकारों से सादर निवेदन है कि वे अपनी रचना टाइप की हुयी तथा हाई रिजलूशन फोटोग्राफ के साथ वर्ड अथवा जे.पी.जी. फार्मेट में ही भेंजे। कोई भी आलेख बिना अच्छे फोटोग्राफ के प्रभावशाली नहीं हो पाता है। इसलिये पुनः अनुरोध है कि आलेख के साथ अच्छे फोटोग्राफ ई–मेल– **prernapatrikabasicedu@gmail.com** पर भेजने की कृपा करें।

सम्पादक

विद्यालय जहाँ अँग्रेजी माध्यम से बच्चे शिक्षित हो रहे हैं

(राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक)

श्री आफाक अहमद
प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय–रावतपार अमेठिया
विकास खण्ड–लार
जनपद–देवरिया (उ.प्र.)

पुरस्कार
राज्य शिक्षक पुरस्कार–2018

ग्रामीण क्षेत्र का एक विद्यालय जहाँ कभी लोगों ने कल्पना भी नहीं की थी कि उनके बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा मिलेगी। हम बात कर रहें हैं जनपद देवरिया के विकास खण्ड–लार के ग्राम रावतपार अमेठिया के प्राथमिक विद्यालय की जहाँ बच्चे अब अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। ग्रामीण भी प्रसन्न और उत्साहित हैं कि वे भले ही वे अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई नहीं कर सके लेकिन उनके बच्चों को गाँव में ही यह सुविधा प्राप्त हो रही है।

विद्यालय में हुये इस कायाकल्प के प्रमुख किरदार हैं विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री आफाक अहमद। श्री आफाक अहमद का कहना है कि जब उन्होंने विद्यालय में योगदान किया था। उस समय उसकी स्थिति बहुत ही खराब थी। टूटी–फूटी फर्स, गन्दी दीवारें, बरसात होने पर छत भी

टपकने लगती थी। विद्यालय के बाहर का मंजर तो देखने लायक ही नहीं था उबड़–खाबड़ मैदान पड़ा था। आज वही विद्यालय एक आदर्श विद्यालय है। ग्राम प्रधान श्रीमती इन्दु देवी और प्रधानाध्यापक की दूरदृष्टि से ऑपरेशन कायाकल्प के अन्तर्गत विद्यालय का वास्तव में कायाकल्प हो गया। विद्यालय में छत की मरम्मत के साथ–साथ फर्स में टाइल्स लगाने, किचन का सुन्दरीकरण, गुणवत्तायुक्त शौचालय, हैण्ड वाशिंग यूनिट, भवन की रंगाई–पुताई और दीवारों पर बाला पेन्टिग ने विद्यालय की सूरत बदल दी। पीने के पानी के लिये सवमर्सिबिल पम्प और टंकी लगवाई गयी। विद्यालय भवन भव्य बन गया है। उसमें 12 कमरे हैं। बच्चों के लिये एक बड़ी डायनिंग टेबल लगाकर डायनिंग हाल बनाया गया है। विद्यालय को सुन्दर बाउण्ड्री वाल से घेर कर भव्य गेट लगाया है। विद्यालय परिसर को हरा–भरा बनाने के लिये पेड़ पौधे लगाये गये। बड़ा सा खेल का मैदान, पुस्तकालय, स्पोर्ट कक्ष और विद्यालय की स्मार्ट क्लास छात्रों में आकर्षण और सीखने की ललक बढ़ा रही है। गाँव का यह विद्यालय आस–पास के गाँवों के लिये आकर्षण का केन्द्र है। छात्रों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है।

श्री आफाक अहमद का शिक्षण के प्रति समर्पित भाव नई तकनीक से दी जाने वाली शिक्षा, छात्रों के सर्वांगीण

विकास हेतु खेल–कूद और साँस्कृतिक कार्यक्रमों के प्रति उनका लगाव विद्यालय को उत्कृष्ट बना रहा है। आपके इन्हीं प्रयासों को देखते हुए वर्ष 2018 में प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा आपको राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। ❑

छात्रों ने जीती मण्डलीय अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता

(राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक)

श्री पंकज कुमार वर्मा
प्रधानाध्यापक
उच्च प्राथमिक विद्यालय–कोटवा
विकास खण्ड–बेहजम
जनपद–खीरी

पुरस्कार
इनोवेटिव टीचर्स पुरस्कार–2015
राज्य शिक्षक पुरस्कार–2018

उच्च प्राथमिक विद्यालय कोटवा, विकास खण्ड बेहजम जनपद खीरी का नाम जिले में ही नहीं अब मण्डल स्तर पर भी उसके नाम का परचम फहरता है। विद्यालय की इस उपलब्धि के पीछे प्रमुख भूमिका है वहाँ के प्रधानाध्यापक श्री पंकज कुमार वर्मा की। श्री वर्मा ने बताया कि जब उनकी नियुक्ति प्रधानाध्यापक के पद पर इस विद्यालय में हुयी थी उस समय विद्यालय की स्थिति बहुत दयनीय थी। केवल शिक्षा मित्र के सहारे विद्यालय चल रहा था। विद्यालय परिसर में ग्रामवासी अपने ट्रैक्टर ट्राली खड़े करते थे और जानवर बाँधते थे। इन सभी समस्याओं से दो चार होते हुए धीरे–धीरे भौतिक सुविधायें बेहतर बनायी गयी। विभागीय एवं जन सहयोग से विद्यालय भवन को आकर्षक बनवाया गया। परिसर में पेड़–पौधे लगाकर हरी भरी क्यारियाँ तैयार की गयीं। धीरे–धीरे बच्चों की संख्या बढ़ने लगी। विद्यालय में शैक्षणिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिये सामान्य ज्ञान, रस, छंद, अलंकार, मुहावरे–लोकोक्तियाँ, समास, पर्यायवाची, विलोम शब्द, गणित व सामाजिक विज्ञान की जानकारी कविताओं के माध्यम से दी जाने लगी। छात्र–छात्राओं को आँचलिक विज्ञान केन्द्र लखनऊ, चिड़ियाघर, आर्यभट्ट इन्स्टीट्यूट ऑफ ऑब्जर्वेशनल साइंस तथा फारेस्ट रिसर्च इन्स्टीट्यूट शैक्षणिक भ्रमण पर भी ले जाना प्रारम्भ किया गया। छात्रों को नियमित रूप से सुविचार पट के माध्यम से एक विचार लिखकर छात्रों को बोलने हेतु प्रेरित किया जाता है और ज्ञान पट पर प्रतिदिन सामान्य ज्ञान की जानकारी लिखकर बतायी जाती है।

इन सभी गतिविधियों का छात्रों पर बहुत ही सकारात्मक असर हुआ और छात्रों ने जनपद स्तरीय सामान्य ज्ञान क्विज प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर 5000/– रूपये का पुरस्कार प्राप्त किया। आपके विद्यालय के छात्रों ने मण्डल स्तरीय अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता में भी प्रथम स्थाान प्राप्त किया है।

आपके प्रयासों से विद्यालय में भौतिक सुविधाओं के विकास के साथ–साथ शैक्षणिक गतिविधियों में भी प्रगति हुयी है। आपकी शिक्षा के प्रति लगन को देखते हुये वर्ष 2018 में माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ जी द्वारा आपको राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ❑

छात्रों को आदर्श नागरिक बनाने की मुहिम

(राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक)

श्री कैलाशनाथ पाल
प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय–बाजपेईपुरवा
विकास खण्ड–डेरापुर
जनपद–कानपुर देहात

पुरस्कार
राज्य शिक्षक पुरस्कार–2018

श्री कैलाशनाथ पाल परिश्रमी, लगनशील और कर्तव्य निष्ठ अध्यापक हैं। आपका विचार है कि प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों को अध्यापन में दूरदृष्टि अपनानी चाहिए। बच्चों को शिक्षित करने के साथ–साथ उनका कर्तव्य है कि वे छात्रों को भविष्य के आदर्श नागरिक बनाने में अपना योगदान दें। श्री पाल अपने विद्यालय में यह उद्देश्य लेकर कार्य करते हैं। बच्चों को पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षित करने के साथ–साथ उन्हें स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों और उनके बलिदानों की कहानियाँ सुनाना, पर्यावरण संरक्षण, पौधरोपण, जल संरक्षण, प्रदूषण और जैवविविधता की जानकारी देते रहते हैं। आप छात्रों के साथ मिलकर प्रमुख दिवस, पर्व त्योहारों, नारी सशक्तिकरण, बेटी सुरक्षा, निर्मल गंगा, पढ़े भारत बढ़े भारत और मतदाता जागरूकता जैसे कार्यक्रमों में भाग लेते हैं और अपने विद्यालय में भी कार्यक्रम आयोजित करते रहते हैं। इस प्रकार की गतिविधियों से बच्चों का सामान्य ज्ञान तो बढ़ता ही है भविष्य में यही गतिविधियाँ उन्हें आदर्श नागरिक बनाती हैं।

श्री पाल ने शिक्षण में पपेट कला का अनोखा प्रयोग किया है पपेट के माध्यम से बच्चे कठिन विषय को रोचक ढ़ंग से समझ लेते हैं। पपेट के माध्यम से छात्र खेल खेल में विषयों को सीख लेते हैं। आपके द्वारा बच्चों के साथ समर कैम्प लगाना, क्राफ्ट कला के माध्यम से उनकों रचानात्मक गतिविधियों से जोड़ना, शैक्षिक भ्रमण आयोजित करना जैसे कार्य महत्वपूर्ण हैं। इस प्रकार की शैक्षणिक गतिविधियों से छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायता मिलती है। आपकी अनोखी शिक्षण पद्धति से विद्यालय के छात्र अनेक प्रतियोगिताओं में सफल हो रहे हैं। अभिभावक भी बच्चों को स्कूल भेजने में काफी रूचि लेते हैं और वे आपकी शिक्षण कला के कायल हैं। अभिभावक आपका सम्मान भी करते है। छात्रों के प्रति आपकी लगन और निष्ठा को देखते हुये आपको वर्ष 2018 के राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। ❑

शून्य से शिखर की ओर
(राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक)

डॉ. हरनंदन प्रसाद
प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय–रसूलपुर नगली
विकास खण्ड–मूँढ़ा पाँडे
जनपद–मुरादाबाद

पुरस्कार
राज्य शिक्षक पुरस्कार–2018

जनपद मुरादाबाद का रसूलपुर नगली गाँव खादर क्षेत्र में गिना जाता है क्योंकि यहाँ हर वर्ष बाढ़ आती रहती है। वैसे शहर से गाँव की दूरी मात्र 30 किलोमीटर ही है फिर भी सुविधाओं के अभाव में यहाँ का प्राथमिक विद्यालय कभी किसी के लिये महत्वपूर्ण नहीं रहा। ग्रामीणों के लिये विद्यालय परिसर पशु बाँधने और ट्रैक्टर ट्राली खड़ी करने का स्थान था। कहने को तो विद्यालय में 114 छात्र नामाँकित थे लेकिन प्रतिदिन 20 से 25 छात्र बड़ी मुश्किल से आते थे। ग्रामीण विद्यालय के प्रति उदासीन थे। ऐसे कठिन समय में प्रधानाध्यापक के रूप में वर्ष 2016 में डॉ. हरनंदन प्रसाद की नियुक्ति हुयी थी। आपने उसी विद्यालय को मात्र 4 वर्षों में जनपद का ही नहीं बल्कि प्रदेश का उत्कृष्ट विद्यालय बना दिया। वर्ष 2018 में विद्यालय को राज्य स्तर पर उत्कृष्ट विद्यालय का पुरस्कार प्राप्त हुआ। रसूलपुर नगली, के इसी

विद्यालय में वे सभी भौतिक सुविधायें हैं जो अच्छे–अच्छे पब्लिक स्कूलों में नहीं होती हैं। विद्यालय की इसी प्रगति को शून्य से शिखर की ओर का खिताब दिया जाता है।

आज इस विद्यालय में प्रोजेक्टर, कम्प्यूटर लैब, स्मार्ट पुस्तकालय, इन्वर्टर सहित निर्बाध विद्युत आपूर्ति अध्यापकों की बायोमेट्रिक उपस्थिति, स्वच्छ और आकर्षक क्लास रूम, बाथरूम, स्वच्छ पेयजल और खेल–कूद की समस्त सुविधायें मौजूद हैं। विद्यालय परिसर व कक्षायें सी.सी.टी.वी. कैमरों से लैस है। विद्यालय में ए.पी.जे. अब्दुल कलाम विज्ञान प्रयोगशाला भी है।

डॉ. हरनंदन प्रसाद जी ने निजी और जन सहयोग से बच्चों के लिये टाई–बेल्ट, आई. कार्ड और सुरक्षा गार्ड की व्यवस्था की है। विद्यालय में प्रत्येक माह छात्रों के जन्मदिन मनाना, उन्हें शैक्षिक भ्रमण पर ले जाना तथा

समय–समय पर बाल मेला, पर्व त्योहार और बाल संसद आयोजित की जाती है। इस समय विद्यालय में 253 बच्चे हैं। विद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। कोरोना काल में वीडियो आधारित शिक्षण अपनाकर और अभिभावकों से नियमित सम्पर्क बनाकर छात्रों की शिक्षा में कोई कमी नहीं आने दी गयी है। विद्यालय के छात्र जनपद एवं मण्डल स्तरीय प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने के साथ–साथ पुरस्कार भी प्राप्त करते हैं।

आप के प्रयासों का प्रतिफल है कि विद्यालय में सीमित स्थान के बावजूद लोग बच्चों को प्रवेश दिलाने के लिये प्रयासरत रहते हैं। विद्यालय की अपनी वेबसाइड व ई–मेल है। प्रवेश प्रक्रिया भी ऑन लाइन सम्पन्न की जाती है।

डॉ. हरनंदन प्रसाद जी द्वारा विद्यालय को शून्य से शिखर पर पहुँचने के लिये वर्ष 2018 का राज्य शिक्षक पुरस्कार माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा प्रदान किया गया था। डॉ. साहब ने पुरस्कार स्वरूप प्राप्त धनराशि रू. 25000/– अपने उपयोग में न लेकर राज्य के विकास हेतु मुख्यमंत्री सहायता कोष को समर्पित कर दिया था। ❑

बाल कविता

तितली रानी

तितली रानी तितली रानी,
कितनी सुंदर कितनी ज्ञानी।
रंग बिरंगे पंख तुम्हारे,
लाल, गुलाबी, पीले न्यारे।
जब तुम फूलों पर जाती हो,
गुन–गुन राग सुनाती हो।
जब कलियों पर जाती हो,
मधु रस पीकर आती हो।
अपने सुंदर पंखों से तुम,
वन उपवन महकाती हो।

जब तुम संग–संग चलती हो,
कितनी सुन्दर लगती हो।
पीछे–पीछे सखिया सारी,
लगती हैं वह कितनी प्यारी।
जब तुम बगिया में आना,
फूलों का रस पीकर जाना।
नन्हें मुन्नें बच्चों का तुम,
मन इतना बहलाती हो।
तितली रानी तितली रानी,
कितनी सुंदर कितनी ज्ञानी।

अजय कुमार वर्मा
शिक्षक
प्रा.वि. भैरवां प्रथम
विकास खण्ड हसवा,
जनपद–फतेहपुर, (उ.प्र.)

बच्चों को बाल मजदूरी से मुक्त कराकर विद्यालय में प्रवेश दिलाया

(राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षिका)

श्रीमती रिचा अग्रवाल
प्रधानाध्यापिका
प्राथमिक विद्यालय–नदनवारा
विकास खण्ड–जखौरा
जनपद–ललितपुर

पुरस्कार
राज्य शिक्षक पुरस्कार–2018

श्रीमती रिचा अग्रवाल अपने विद्यालय में भौतिक संसाधनों की विकास करने और शैक्षणिरक गतिविधियों की वृद्धि में अपना उत्कृष्ट योगदान दे रही हैं। विद्यालय को राज्य स्तर पर उत्कृष्ट विद्यालय बनाने के साथ–साथ सम्पूर्ण प्रदेश के प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालय आपकी प्रतिभा और योगदान से लाभान्वित हो रहे हैं। आपने बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों के लिये दूरदर्शन से प्रसारित किये जाने शैक्षिक प्रसारण के लिये 36 वीडियो पाठ तैयार करने में मुख्य भूमिका निभायी है। आपके सहयोग से तैयार वीडियोज का प्रसारण दूरदर्शन द्वारा किया जा रहा है।

श्रीमती रिचा अग्रवाल ने अपने सामाजिक दायित्वों के निर्वहन में भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। आपके प्रयास से 117 बच्चों को नया जीवन मिला है। विद्यालय के कुछ छात्र मात्र 4 महीने गाँव में रहते और शेष अवधि में वे अपने अभिभावकों के साथ बाल मजदूरी करने इन्दौर चले जाते थे। बच्चों के शिक्षा से वंचित होने के कारण आप काफी दुःखी हुयी और स्थानीय लोगों से बच्चों के अभिभावकों का इन्दौर का पता हासिल किया। पता प्राप्त होने के बाद सभी बच्चों के नाम और पता सहित सूची चाइल्ड हेल्प लाइन 1098 को मेल की। चाइल्ड हेल्प लाइन के साथ–साथ इन्दौर, मध्य प्रदेश के सहायक श्रमायुक्त से सम्पर्क कर उन्हें भी बच्चों की सूची उपलब्ध करायी। उनसे इन बच्चों को बाल मजदूरी से मुक्त कराकर स्थानीय विद्यालय में प्रवेश दिलाने का अनुरोध किया। सहायक श्रमायुक्त द्वारा सर्वे कराकर सभी 117 बच्चों की सूची वहाँ के जिला शिक्षा अधिकारी को दी गयी और बच्चों का विद्यालय में प्रवेश कराने हेतु निर्देशित किया गया। रिचा जी ने स्वयं जिला शिक्षा अधिकारी और जिलाधिकारी से इस सम्बन्ध में अनुरोध किया। आपके सफल प्रयास से 117 बच्चे अब स्कूल में अध्ययन कर रहे हैं।

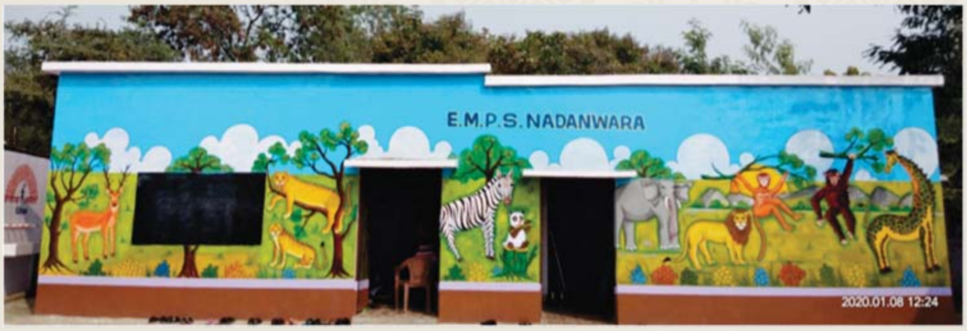

श्रीमती रिचा अग्रवाल अपने विद्यालय में भौतिक परिवेश और शैक्षिक उन्नयन के लिये बराबर प्रयास करती रहती हैं। आपका प्रयास

रहता है कि बच्चे नियमित रूप से विद्यालय आयें। विद्यालय में बच्चों के ठहराव के लिये खेल–कूद, नाटक और कठपुतली के माध्यम से उनके सर्वांगीण विकास का प्रयास किया जाता है। विद्यालय में नियमित विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित कर, ऑपरेशन कायाकल्प के माध्यम से उच्च गुणवत्ता के साथ कार्य कराये गये हैं। विद्यालय अब बच्चों का आकर्षण का केन्द्र है। साफ–सुथरे स्मार्ट क्लास रूम, नल द्वारा स्वच्छ पेय जल, साफ–सुथरे शौचालय, टाइलयुक्त परिसर लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। परदेशी लोग तो विद्यालय को देखकर विश्वास ही नहीं कर पाते कि यह वही पुराना

विद्यालय है। आपने विद्यालय में एक सुन्दर किचेन गार्डेन भी तैयार करायी है। जिसमें उत्पादित सब्जियाँ बच्चों का पोषण तो बढ़ाती ही हैं उन्हें नया ज्ञान भी देती हैं। स्कूल में खेल के मैदान का अभाव था उसकी कमी आपने स्कूल के पास रिक्त ग्राम समाज की भूमि द्वारा कर ली है। जन सहयोग और श्रमदान से वह ऊबड़–खाबड़ क्षेत्र अब बच्चों के खेलने का मैदान बन गया है। आपकी प्रतिभा, लगन और शिक्षा के प्रति समर्पण को देखते हुये वर्ष 2018 का राज्य शिक्षक पुरस्कार प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ जी द्वारा प्रदान किया गया है। ❑

पिछड़े क्षेत्र का विद्यालय बना जनपद का सर्वोत्तम विद्यालय

(राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षक)

श्री अरविन्द कुमार पाल
प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय–चितईपुर
जनपद–भदोही (उ.प्र.)

पुरस्कार
राज्य शिक्षक पुरस्कार–2018

श्री अरविन्द कुमार पाल एक ऐसे लगनशील और कर्तव्य परायण अध्यापक हैं जिन्होंने सीमित संसाधनों के बावजूद विद्यालय को नई पहचान दी। आप वर्तमान में प्राथमिक विद्यालय चितईपुर तहसील ज्ञानपुर जिला भदोही में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। आपके विद्यालय को वर्ष 2016 में माननीय बेसिक शिक्षा मंत्री द्वारा जनपद के सर्वश्रेष्ठ विद्यालय का पुरस्कार प्रदान किया गया था। पिछड़े क्षेत्र के इस विद्यालय को सर्वश्रेष्ठ विद्यालय बनाने के पीछे आपकी लगन और कठिन परिश्रम का हाथ है।

वर्ष 2007 में जब आप की नियुक्ति इस विद्यालय में हुयी थी उस समय विद्यालय में साधनहीन, गरीब और मजदूर वर्ग के ही कुछ बच्चे पढ़ते थे वे भी खेतों में काम होने पर स्कूल नहीं आते थे। विद्यालय भवन ग्रामीण बस्ती से अलग ऊसर क्षेत्र में बना हुआ था। भौतिक सुविधाओं का अभाव था। विद्यालय में बाउण्ड्री न होने के कारण यदि पेड़–पौधे लगाने का प्रयास किया जाता था तो असामाजिक तत्व उसे नष्ट कर देते थे। इन परिस्थितियों के बावजूद आपने हिम्मत नहीं हारी और निरन्तर प्रयास करते रहे। जन प्रतिनिधियों से सम्पर्क कर विद्यालय को बेहतर बनाने के प्रयास जारी रखा। विद्यालय की सफाई, रँगाई–पुताई तथा विद्यालय में पेन्टिंग

की मदद से टी.एल.एम. और अन्य आकर्षक एवं ज्ञानवर्धक पेन्टिंग बनवायी गयी। विद्यालय परिसर में हरियाली बढ़ाने के लिये पेड़ पौधे लगवाये गये। गमले में फूल के साथ सजावटी पौधे विद्यालय की शोभा बढ़ाने लगे। विद्यालय में आकर्षण बढ़ने से नामाँकन भी बढ़ने लगा।

आप ने अपने निजी व सामुदायिक सहयोग से विद्यालय में साउण्ड सिस्टम स्थापित किया, जिसमें सभी बच्चों को बोलने का अवसर दिया जाने लगा। शैक्षिक गुणवत्ता बढ़ाने के लिये आपने विद्यालय में लैपटॉप का प्रयोग शुरू किया।

धीरे–धीरे यह प्रयास स्मार्ट क्लास स्थापना तक जा पहुँचा और आपका विद्यालय स्मार्ट क्लास स्थापित करने वाला जिले का पहला विद्यालय बना। स्मार्ट क्लास से बच्चों की शिक्षा में चार–चाँद लग गये और विद्यालय में छात्रों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गयी।

वर्तमान में विद्यालय में अलग से कम्प्यूटर लैब है जहाँ बच्चे कम्प्यूटर पर कार्य करना सीखते हैं। आप जन सहयोग से विद्यालय में सी.सी.टी.वी. कैमरे लगवाकर बच्चों की गविविधियों पर नजर रखते हैं। बच्चो की सुविधा के लिये विद्यालय में टैबलेट और 3 डी.वी.आर. बॉक्स की सुविधा उपलब्ध करायी गयी है। जिससे शैक्षिक गतिविधियों में बहुत परिवर्तन आया है। इन सभी सुविधाओं से बच्चों को सीखने में आशातीत सफलता प्राप्त हुयी है।

आपने विद्यालय में प्रभावी बाल संसद का गठन कर विद्यार्थियों में प्रारम्भ से राजनीतिक कौशल और प्रबन्धकीय गुणों के विकास को बढ़ावा दिया है। जिसका प्रभाव बच्चों पर उनके सभी प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन के रूप में दिखायी पड़ता है। श्री पाल जी का एक ही उद्देश्य है कि हमारे विद्यालय के बच्चे निजी कान्वेन्ट विद्यालयों के छात्रों से हर क्षेत्र में आगे रहें।

श्री अरविन्द कुमार पाल जी को शिक्षा के क्षेत्र में किये गये उत्कृष्ट प्रयासों को देखते हुये वर्ष 2018 में माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी द्वारा राज्य शिक्षक सम्मान से पुरस्कृत किया गया। ❑

उच्च गुणवत्ता के लिये: प्री प्राइमरी कक्षा

(आई.सी.टी. अध्यापक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षिका)

श्रीमती प्रतिमा सिंह
प्रधानाध्यापिका
प्राथमिक विद्यालय–धुसाह प्रथम
जनपद–बलरामपुर

पुरस्कार
राष्ट्रीय आई.सी.टी. पुरस्कार–2017

जनपद बलरामपुर प्रदेश के पिछड़े जिलों में शुमार होता है। जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकांश लोग खेती–पाती करके जीवन यापन करते हैं। विद्यालय होने के बावजूद लोग अपने बच्चों को कृषि कार्य में संलग्न रखते हैं। लड़कियों के मामले में यह समस्या और भी विकट है। उनकों स्कूल न भेजकर या तो कृषि कार्य में सहयोग लिया जाता है अथवा उन्हें घर पर छोटे बच्चों की देखभाल के लिये छोड़ दिया जाता है। वर्ष में जब खेती के कार्य अधिक होते हैं उस समय यह समस्या और विकराल हो जाती है। स्कूलों में जो बच्चे नामाँकित रहते हैं वे भी इस समय स्कूल न आकर खेती–बाड़ी के कार्यों में लग जाते हैं।

प्राथमिक विद्यालय धुसाह प्रथम की प्रधानाध्यापिका श्रीमती प्रतिमा सिंह ने इस समस्या का समाधान करने के लिये एक विशेष नवाचार का विकास किया। आपने विद्यालय में प्राथमिक कक्षा के साथ–साथ प्री प्राइमरी कक्षाओं का शुभारम्भ किया। इस प्री प्राइमरी कक्षा में 6 वर्ष से कम आयु के बच्चों को स्कूल बुलाकर उनको खेल–खेल में सिखाने का कार्य प्रारम्भ किया गया। इस प्री प्राइमरी कक्षा का दोहरा लाभ मिला, एक तो प्रथम कक्षा के लिये होनहार और योग्य बच्चे मिल गये दूसरे अभिभावक जो छोटे बच्चों की जिम्मेदारी लड़कियों पर छोड़ जाते थे उससे मुक्ति मिली और लड़कियाँ नियमित विद्यालय आने लगीं। इस नवाचार से लड़कियों की शिक्षा को बल मिला। आपके इस नवाचार का प्रयोग सम्पूर्ण जनपद में किया गया। परिणाम स्वरूप 2017–18 में जनपद में लगभग 13000 बालक–बालिका प्री प्राइमरी के लिये नामांकित किये गये। प्री प्राइमरी के नामांकित छात्रों की गुणवत्ता भी अपेक्षाकृत अच्छी रही।

श्रीमती प्रतिमा सिंह विद्यालयों में आई.सी.टी. के माध्यम से शिक्षा देने के आन्दोलन की प्रमुख किरदार हैं। आपने आई. सी.टी. के नवीन प्रयोगों से शैक्षिक स्तर में सुधार कर अपने विद्यालय को मॉडल के रूप में विकसित किया है। अपने विद्यालय में आप ने ऑनलाइन अटेंडेंस, कक्षा में

ऑडियो–विजुअल तथा अन्य निःशुल्क और ओपेन सॉफ्टवेयर का उपयोग कर उच्च गुणवत्ता और प्रभावी शिक्षण की शुरूआत की है। आपके प्रयासों का ही परिणाम था कि जनपद के 1100 विद्यालयों में स्मार्ट क्लास की स्थापना हो सकी है। इसके लिये एन.सी.ई.आर.टी. के एस.आर.जी. के रूप में आपका सहयोग सराहनीय रहा है।

नवाचारों के विकास और जनपद में आई.सी.टी. के माध्यम से शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन हेतु वर्ष 2017 में आपको राष्ट्रीय आई.सी.टी. अध्यापक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपको एन.सी.एस.एल. नीपा व एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में भी सम्मानित किया गया है।

आपने अपने विद्यालय के छात्रों में सृजनात्मकता के विकास के लिये फ्री और ओपेन सॉफ्टवेयर स्क्रैच का उपयोग करते हुये एनिमेशन के निर्माण में सहयोग दिया है। इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से छात्रों को बैकग्राउण्ड और स्पराइट देकर उन्हें अपनी कल्पनाशीलता से आवाज देने को कहा जाता है। जिसे बच्चे सुनकर गौरवान्वित महसूस करते हैं। उनके सीखने और टीम के रूप में कार्य करने की क्षमता का विकास होता है। ❑

शैक्षणिक कौशल ने दिलाया सम्मान

(राज्य स्तर पर सम्मानित शिक्षिका)

सुश्री नाजिया अजहर
सहायक अध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय भवानीपुर,
विकास खण्ड–औराई,
जनपद–भदोही

पुरस्कार
राज्य स्तरीय पाठ योजना पुरस्कार–2018

मात्र दो वर्ष के अनुभव, ज्ञान और शैक्षिणिक कौशल ने सुश्री नाज़िया अजहर को राज्य स्तर पर सम्मान तो दिलाया ही वे अग्रेजी विषय की मास्टर ट्रेनर के रूप में भी चयनित हुई हैं।

सुश्री नाज़िया अजहर की नियुक्ति वर्ष 2016 में प्राथमिक विद्यालय भवानीपुर में सहायक अध्यापक के पद पर हुई थी। अपने ज्ञान और कौशल से ही उन्हें 2017–18 में आयोजित पाठ योजना प्रतियोगिता जनपद–भदोही की ओर से प्रतिभाग करने का अवसर प्राप्त हुआ।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा उनकी पाठ योजना का चुनाव हुआ। चयनित होने के बाद आपकी पाठ योजना का प्रस्तुतीकरण हुआ। कई प्रतिभागियों के मध्य आपकी पाठ योजना को मार्च, 2018 में ''राज्य स्तरीय पाठ योजना पुरस्कार'' प्राप्त हुआ।

शैक्षणिक कुशलता के साथ–साथ आई.सी.टी. के उपयोग से महापुरूषों की जयन्तिओं पर बच्चों को फिल्म के माध्यम से शिक्षित करना, मोबाइल को साउन्ड बाक्स से जोड़ते हुये बच्चों को कवितायें सुनाना, बच्चों को गिनती, रंगों, फूलों, फलों से अवगत कराना और पाठ्यक्रम आधारित चित्रों को दिखाकर पढ़ाना, आपकी प्राथमिकता है। बच्चों की रचनात्मकता को विकसित करने के लिए विद्यालय में आपने दैनिक बाल अखबार जैसे नवाचार की शुरूआत की है। बाल अखबार के सभी कार्य बच्चें ही करते हैं। शिक्षण प्रक्रिया में पपेट का भी आप उपयोग करती हैं।

वर्ष 2018–19 में राज्य स्तर पर आयोजित आई.सी.टी. शिक्षण प्रतियोगिता में भी आपको भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। वर्ष 2018 में आपको ब्रिटिश कौंसिल द्वारा कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय के शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए अग्रेंजी विषय के मास्टर ट्रेनर के रूप में चयनित किया गया है। ❑

साधन विहीन विद्यालय बना जनपद का उत्कृष्ट विद्यालय

(आपरेशन कायाकल्प से बदली तस्वीर)

श्री सर्वेश कुमार अवस्थी
प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय बाबूपुर,
जनपद–फतेहपुर

पुरस्कार
जनपद का उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार

जनपद–फतेहपुर के विकास खण्ड अमौली के ग्राम बाबूपुर में एक छोटा सा प्राथमिक विद्यालय है। कहने को विद्यालय था लेकिन ग्रामीण भी उसकी अव्यवस्था से निराश थे। विद्यालय में मात्र 32 छात्रों का नामांकन था, ये वही छात्र थे, जिनके परिवार की स्थिति ऐसी नहीं थी वे बाहर जाकर पढ़ सकें। विद्यालय भवन बहुत ही दयनीय अवस्था में था। विद्यालय प्राँगण में जल भराव, अतिक्रमण, छतों से जरा सी बारिश होने पर पानी टपकने लगता, टूटी फर्श और विद्यालय की बाउन्ड्री तो थी ही नहीं। ऐसी दयनीय दशा में विद्यालय के प्रधानाध्यापक के पद पर श्री सर्वेश कुमार अवस्थी की नियुक्ति हुई। श्री अवस्थी विद्यालय की दशा देखकर काफी दुःखी हुये और उन्होंने प्रण किया कि हम सब मिलकर विद्यालय को उत्कृष्ण बनायेंगे।

श्री अवस्थी ने ग्राम सभा के ग्राम प्रधान व अन्य सम्भ्रान्त लोगों की बैठक बुलाई, जिसमें विद्यालय को सुधारने और शैक्षिक स्तर उन्नत बनाने का निर्णय लिया गया। विद्यालय के भौतिक परिवेश को सुधारने में माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा शुरू की गयी आपरेशन कायाकल्प का साथ मिला। ऑपरेशन कायाकल्प के अन्तर्गत विद्यालय की बाउन्ड्रीवॉल, भवन की मरम्मत, फर्श का टाइलीकरण, स्वच्छ शौचालय, आर.सी.सी.

रोड, किचेन और रनिंग वाटर की व्यवस्था की गयी। विद्यालय परिसर में मिट्टी डलवाकर उसे ऊँचा किया गया ताकि जलभराव न हो। परिसर में एक सुन्दर किचेन गार्डेन बनायी गयी साथ में अन्य पेड, पौधे लगाकर हरा–भरा बनाया गया। विद्यालय भवन और बाउन्ड्रीवॉल की पेंन्टिग कराकर परिसर को गेट लगाकर सुरक्षित किया गया।

विद्यालय की भौतिक दशा में सुधार को देखकर ग्रामीणों ने भी सहयोग हेतु हाथ बढ़ाया। सामुदायिक सहयोग से विद्यालय में स्मार्ट टी.वी., सबमर्सिबिल पम्प और बच्चों के लिए झूले और खेलकूद की सुविधा बढ़ाई गयी। अब बारी थी शैक्षिक स्तर के सुधार की। प्रधानाध्यापक श्री अवस्थी द्वारा सामुदायिक सहयोग से लगवाये गये पी.ए. सिस्टम के साथ सुबह की प्रार्थना, पी.टी. और योग क्लास की शुरूआत करायी गयी। कक्षा में छात्रों को टी.एल.एम. की मदद से पाठ्यक्रम के साथ कहानी कविता और नैतिक शिक्षा दी जाने लगी। छात्रों के सीखने का मूल्याँकन अभिभावकों के साथ साझा किया जाने लगा। विद्यालय के भौतिक और शैक्षणिक परिवर्तन का प्रचार–प्रसार आस पास के गाँवों तक हुआ। गाँव तथा समीप के अन्य गाँवों के बच्चें जो कान्वेन्ट स्कूल में जाने लगे थे, वे विद्यालय वापस आने लगे। विद्यालय में नांमाकन में आशातीत वृद्धि हुई है। पड़ोस के गाँवों से छोटे बच्चें ई–रिक्शा से स्कूल आते हैं।

विद्यालय की शिक्षण विधियों में नये–नये प्रयोग किये जाने लगे, जिसका सुखद परिणाम प्राप्त हुआ। विद्यालय के बच्चें खेल–कूद और नवोदय विद्यालय में चयन परीक्षा में सफलता अर्जित करने लगे हैं। श्री अवस्थी ने विद्यालय में एक नवीन प्रयोग किया। अपने विद्यालय के एक कक्ष को हैप्पीनेस क्लास के रूप में विकसित किया। इस कक्ष में दीवारों पर सुन्दर बाला पेन्टिंग, खिलौने और टी.वी. की सुविधा उपलब्ध करायी गयी। इस हैप्पीनेस क्लास का उद्घाटन प्रदेश के कारागार राज्य मंत्री माननीय जय कुमार सिंह, जैकी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। आपकी इस हैप्पीनेस क्लास की अवधारणा को जिलाधिकारी द्वारा सराहा गया। करोना काल में भी आपने बच्चों की शिक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ने दिया। नियमित रूप से ऑनलाइन, ऑफलाइन क्लास, मोहल्ला क्लास से छात्रों को शिक्षित करने का प्रयास कर रहें हैं।

आपके प्रयासों से एक साधन विहीन विद्यालय जनपद के आदर्श विद्यालय के रूप में पहचान बनाने में सफल रहा। प्रदेश के स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में जिलाधिकारी महोदय द्वारा आपको जिले के उत्कृष्ट शिक्षक के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ❑

एक सरकारी स्कूल : तब और अब

(आपरेशन कायाकल्प से बदली तस्वीर)

मैं एक सरकारी स्कूल हूँ। जी हाँ वही सरकारी स्कूल जिसका नाम सुनकर आपके मन मस्तिष्क में एक टूटा–फूटा भवन, टाट पट्टियों पर बैठकर पढ़ते गंदे मैले बच्चे। लेकिन अब ऐसा नही है। जी हाँ थोड़ा अपना ज्ञान बढ़ाइये तो आज आप देखेंगे कि हमारे जनपद में सैकड़ों ऐसे विद्यालय हैं जो कान्वेट स्कूलों से भी बेहतर हैं। चलिये मैं अपने बारे में बताता हूँ, मेरा नाम पूर्व माध्यमिक विद्यालय इब्राहिमपुर साधो, विकास क्षेत्र–आकूँ (नहहौर) जनपद बिजनौर है। मैं मुख्यालय से लगभग 30 किमी. दूर सम्पर्क मार्गों से अलग काफी अन्दर की तरफ ग्राम पंचायत इब्राहिमपुर साधो में स्थित हूँ। 2016 से पहले मेरी वही स्थिति थी जो एक बेचारे सरकारी स्कूल की होती थी। मैं पड़ोस के विद्यालय के अध्यापक द्वारा संचालित होता था। कई कारणों से कोई भी अध्यापक वहाँ नहीं आना चाहते थे और जो आते थे वह गाँव वालों और विद्यालय की असुविधाओं के कारण वहाँ से स्थानान्तरण करा लेते थे। 2016 में यहाँ तीन अध्यापकों श्री रामोतार सिंह, श्री मनीष कुमार एवं श्रीमती बीना ऋषि की नियुक्ति हुई। उस समय मेरे पास न तो चाहरदीवारी थी, न ही हैण्डपम्प, खेल का मैदान, बिजली आदि भी नहीं थे। फर्श टूटा हुआ एवं दो कमरों में कबाड़ आदि भरा था। श्री रामोत्तर सिंह द्वारा प्रभारी प्रधानाध्यापक का दायित्व संभाला गया। इसके बाद मेरी तस्वीर बदलने लगी और अगले ही वर्ष छात्र नामांकन–112, उसके बाद–132 और इस वर्ष नामांकन–142 था। अब मेरी गिनती जिले के अच्छे विद्यालयों में की जाती है। माननीय मुख्यमंत्री की आपरेशन कायाकल्प योजना से आज मेरे पास फर्नीचर, स्मार्ट क्लास, सुन्दर प्रांगण एवं सबमर्सबिल पम्प, बहुटोंटी पानी व्यवस्था एवं बड़ा खेल का मैदान भी है। मुझे लगातार दो वर्षों से जिलाधिकारी बिजनौर द्वारा उत्कृष्ट विद्यालय का सम्मान भी मिल रहा है। मेरे विद्यालय के बच्चों द्वारा क्रीड़ा प्रतियोगिता में भी मण्डल स्तर से 16 गोल्ड जीते गये हैं। अपने ब्लॉक का मैं इकलौता अंग्रेजी माध्यम का विद्यालय भी चुना गया हूँ। मेरे प्रांगण में प्रतिवर्ष ब्लॉक स्तरीय टी.एल.एम. मेला व अन्य प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। इस समय जब सभी विद्यालय बन्द हैं मेरे विद्यालय के बच्चे ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। मेरे विद्यालय के बच्चों द्वारा लोगों को कोविड–19 की जानकारी बचाव के तरीके एवं ग्रामवासियों को स्वयं मास्क बनाकर भी बाँटे गये हैं। विद्यालय में हुये इस परिवर्तन के लिए मैं खण्ड शिक्षा अधिकारी ऑकू और जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को धन्यवाद देता हूँ। मेरा यह कायाकल्प प्रधानाध्यापक श्री रामोत्तर सिंह की सकारात्मक सोच एवं स्टॉफ की लगन का नतीजा है। ❑

सौजन्य से
रामोत्तर सिंह
प्रधानाध्यापक
प्राथमिक विद्यालय–इब्राहिमपुर साधो,
जनपद–बिजनौर

लला मत जाओ, तुमने विद्यालय को नयी पहचान दिलाई है

(आदर्श अध्यापक श्री अभिषेक कुमार)

विगत 02 मार्च, 2021 दिन मंगलवार, अवसर था प्राथमिक विद्यालय लदपुरा, ब्लाक–अमरिया, जनपद–पीलीभीत में शिक्षक संकुल की बैठक और विद्यालय में स्मार्ट क्लास का उद्‌घाटन तथा इसी कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षक श्री अभिषेक कुमार शुक्ला का विदाई समारोह भी आयोजित किया गया था। श्री अभिषेक का स्थानान्तरण उनके गृह जनपद सीतापुर हो गया था। विद्यालय में अभिषेक कुमार के सौजन्य से स्थापित स्मार्ट क्लास का उद्‌घाटन खण्ड शिक्षा अधिकारी, अमरिया श्री श्रीराम सक्सेना द्वारा सम्पन्न हुआ। उन्होंने विद्यालय को एक नई पहचान देने के लिए श्री अभिषेक कुमार शुक्ला को बधाई दी और कहा कि यह विद्यालय और यहाँ के निवासी आपके कार्यों को कभी भुला नहीं सकेंगे।

श्री अभिषेक कुमार के विदाई समारोह में आस–पास के गाँवों से छात्र और उनके अभिभावक भी उपस्थित हुए थे। अभिभावकों ने नम आँखों से श्री अभिषेक कुमार को विदाई देते हुए कहा कि आपने इस विद्यालय में शैक्षिक अन्नयन के साथ–साथ इसके परिवेश में जो सुधार किया है, वह अद्वितीय है। वर्ष 2015 में जब आपने इस विद्यालय में योगदान किया था तब विद्यालय शैक्षणिक के साथ अन्य क्षेत्र में भी निम्न स्तर का था। आपने विद्यालय की प्रगति के लिए तन, मन और धन न्योछावर कर दिया। विद्यालय में चारों तरफ हरियाली है, विद्यालय का किचेन गार्डेन आपकी रचनात्मकता का द्योतक है। विद्यालय के शैक्षिक अन्नयन में आपका अमूल्य योगदान है। आपने विद्यालय के शिक्षकों के साथ मिलकर नई शिक्षण विधियों, शैक्षिक नवाचार और टी.एल.एम. का प्रयोग कर विद्यालय में शिक्षा के स्तर को बढ़ाया है। पहले जहाँ विद्यालय में बहुत कम छात्र आते थे, अब आस–पास के गाँवों से भी छात्र पढ़ने आने लगे हैं। आप की साहित्यिक रूचि का लाभ भी विद्यालय को प्राप्त हुआ है। बेसिक शिक्षकों के ऑनलाइन काव्य पाठ में आपने जनपद का प्रतिनिधित्व किया है और आपके लेख व कवितायें विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में भी छपते रहते हैं।

श्री अभिषेक कुमार के विदाई समारोह में उपस्थित अभिभावक इतने अभिभूत हो गये कि उनकी आँखें नम थी और बार–बार यही रट लगाये थीं–लला तुम मत जाओ, तुमने विद्यालय को नई पहचान दिलाई है। ❑

"अस्तित्व"

मैं हूं, है मेरा भी अस्तित्व ,
परिचय है मेरा, मेरा ही व्यक्तित्व
क्यों छोड़ दूं सपने अधूरे ?
क्यों चाह कर भी, उड़ ना पाऊं ?
हो मेरी मंजिले अपनी...
हो एक अपना मुकां...
समय की बहती धारा में
धरा में हो मेरे भी निशां
चाह जो मन में दबी,
ख्वाहिशें आधी-अधूरी..
छूने को वह आसमां,
कोशिशें हर पल जगी..
मुट्ठी में समेटे ये जहां
खुद से मैं पूछूं, कर जाऊं मैं क्या ?
इन हौसलों की उड़ान में
जग की खड़ी कतार में
पा जाऊं मैं सारा जहां
दे पाऊं अपनी पहचान मैं...
दे जाऊं अपनी पहचान मैं... ❑

मृदुला श्रीवास्तव
पूर्व माध्यमिक विद्यालय
गोहरामऊ, काकोरी
लखनऊ

छात्रों की प्रतिभा देख अभिभूत हुए नीति आयोग के उपाध्यक्ष

(कम्पोजिट विद्यालय कुण्डासर, जनपद–बहराइच)

जनपद–बहराइच प्रदेश के आकाँक्षी जिलों में आता है। यह जिला शैक्षिक और आर्थिक रूप से पिछड़ा माना जाता है। जिले की मौजूदा हालत और सरकारी योजनाओं के कार्यान्वयन की स्थिति जानने के लिए विगत 25 फरवरी, 2021 को नीति आयोग के उपाध्यक्ष डा. राजीव कुमार का जनपद–बहराइच आगमन हुआ। उपाध्यक्ष महोदय के भ्रमण कार्यक्रम में तहसील कैसरगंज के बी.आर.सी. केन्द्र कुण्डासर परिसर स्थित कम्पोजिट विद्यालय कुण्डासर का भी नाम था। विद्यालय का शैक्षणिक और भौतिक परिवेश उत्कृष्ट था फिर भी अधिकारियों को चिन्ता इस बात की थी कि उपाध्यक्ष महोदय के समक्ष विद्यालय की उपलब्धियों का प्रस्तुतीकरण कैसे कराया जाय। विद्यालय में उपाध्यक्ष महोदय के आगमन को देखते हुए कुछ अतिरिक्त अध्यापकों की ड्यूटी लगायी गयी, जिसमें मेरा भी नाम था। मैने विद्यालय के बच्चों से बात कर उनके द्वारा ही उपाध्यक्ष महोदय के स्वागत की योजना बनायी। बच्चों का शैक्षिक ज्ञान भरपूर था। बस बोलने में केवल झिझक थी, जिसे अभ्यास से दूर कराया गया। मुख्य अतिथि के स्वागत के लिए विद्यालय में गठित संसद की प्रधानमंत्री कक्षा–7 की कुमारी निधि सोनी और साथी छात्रा रूपाली को तैयार किया गया। अधिकारियों को संशय था कि बच्चें है कहीं कुछ गड़बड़ न कर दे लेकिन छात्राओं के आत्म विश्वास को देखते हुये निश्चय हुआ कि यही छात्रायें मुख्य अतिथि का स्वागत करेंगी और विद्यालय भ्रमण भी करायेंगी।

निर्धारित समय पर नीति आयोग के उपाध्यक्ष डा. राजीव कुमार का आगमन हुआ। विद्यालय के गेट पर छात्रा कुमारी निधि सोनी और कुमारी रूपाली ने जिलाधिकारी और बेसिक शिक्षा अधिकारी की उपस्थिति में उपाध्यक्ष महोदय को तिलक लगाया और कहा कि विद्यालय कुण्डासर के परिसर में मैं बाल संसद की प्रधान मंत्री कुमारी निधि सोनी अपनी साथी कुमारी रूपाली के साथ आपका हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करती हूँ। अब मैं सबसे पहले आपको अपने विद्यालय का भ्रमण कराऊँगी। दोनों छात्राओं ने उपाध्यक्ष महोदय को विद्यालय के प्रत्येक कक्ष पुस्तकालय, विज्ञान कक्ष, पर्यावरण कक्ष, स्मार्ट क्लास, रसोईघर, शौचालय एवं खेल परिसर का भ्रमण कराया। भ्रमण के दौरान निर्भीकता से उपाध्यक्ष महोदय के प्रश्नों का विश्वास के साथ उत्तर भी देती रहीं। भ्रमण के समय उपाध्यक्ष महोदय ने क्लास में बच्चों के शैक्षिक स्तर को परखने के लिए तरह–तरह के प्रश्न पूछे जिनका छात्रों ने आत्म विश्वास के साथ उत्तर दिया। छात्रों के उत्तर से वे संतुष्ट और प्रसन्न दिखे।

बीआरसी व कुण्डासर विद्यालय पहुंचे नीति आयोग के उपाध्यक्ष

बहराइच। एक ही परिसर में स्थापित ब्लाक संसाधन केन्द्र, प्राथमिक एवं

- छात्रों से वार्ता कर परखी शैक्षिक गुणवत्ता
- बाला पेंटिंग सहित तमाम व्यवस्थाओ का लिया जायजा

उच्च प्राथमिक विद्यालय कुण्डासर तथा मिशन प्रेरणा प्रशिक्षण भवन का निरीक्षण कर कराये गये कार्यों का नीति आयोग उपाध्यक्ष डॉ. राजीव कुमार ने निदेशक नीति आयोग अनामिका सिंह, वरिष्ठ सलाहकार एसोशिएशनल डिस्ट्रिक्ट प्रोग्राम रामा कामा राजू, अपर निजी सचिव शिवम तेवतिया के साथ जायजा लिया। उच्च प्राथमिक विद्यालय के निरीक्षण के दौरान कक्षा के बच्चों से पठन-पाठन के बारे में जानकारी प्राप्त की। डॉ. कुमार ने यहाँ पर स्मार्ट क्लास, पोषण वाटिका, पुस्तकालय, मीना मंच, विज्ञान प्रयोगशाला, स्वच्छ शौचालय इत्यादि तथा प्राथमिक विद्यालय में पुस्तकालय, कक्ष-कक्षों में कराये गये बाला पेंटिंग इत्यादि का अवलोकन कर परिसर स्थित विद्यालयों एवं ब्लाक संसाधन केन्द्र की व्यवस्थाओं पर संतोष व्यक्त किया।

इस अवसर पर डीएम शम्भु कुमार, सीडीओ कविता मीना, एसडीएम नानपारा सूरज पटेल आईएएस, कैसरगंज के महेश कुमार कैथल, बीएसए दिनेश कुमार यादव सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी मौजूद रहे।

उपाध्यक्ष डा. राजीव कुमार छात्राओं के द्वारा आयोजित भ्रमण से बहुत प्रभावित हुये उन्होंने छात्रा निधि से पूछा कि बड़े होकर क्या बनना चाहती हो। छात्रा ने कहा मैं बड़ी होकर पुलिस ऑफीसर बनना चाहूँगी ताकि समाज में फैली बुराइयों को दूर कर सकूँ। कुमारी निधि के इस जवाब से वे बहुत प्रसन्न हुये और दोनों को आर्शीवाद दिया। भ्रमण के अन्त में उन्होंने दोनों छात्रओं के साथ फोटो भी खिचवाई। डा. राजीव कुमार ने भ्रमण के पश्चात अपने ट्यूटर एकाउन्ट से ट्यूट कर बच्चों की सराहना की और भ्रमण के फोटोग्राफ भी शेयर किये। मेरा मानना है कि प्रतिभा तो हर बच्चें में होती है। शिक्षकों का दायित्व है कि उनकी प्रतिभा को सामने लायें उसे निखारें और राष्ट्र निर्माण में भागीदार बनने का अवसर प्रदान करें। ❑

पूरन लाल चौधरी
सहायक अध्यापक
प्राथमिक विद्यालय बरूआ बेहड़
महसी, बहराइच

मध्यान्ह भोजन योजना

(कोरोना काल में भी बच्चों के पोषण की व्यवस्था)

भारत सरकार द्वारा 15 अगस्त, 1995 से देशभर के प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों को कुपोषण से बचाने के लिये मध्यान्ह भोजन योजना का शुभारम्भ किया गया था। दिनाँक 28 नवम्बर, 2001 को माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा बच्चों को कुपोषण से बचाने के लिये उन्हें पका–पकाया भोजन दिये जाने का निर्देश दिया गया था। सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश के क्रम में 01 सितम्बर, 2004 से प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों को पका–पकाया भोजन दिये जाने का कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। वर्ष 2008 से इस योजना को सम्पूर्ण प्रदेश के प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों में लागू कर दिया गया था। वर्तमान में इस योजना से प्रदेश के 114382 प्राथमिक और 54386 उच्च प्राथमिक विद्यालयों के लगभग 186 लाख विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं।

कोविड महामारी के दौरान विद्यालयों के बन्द होने के कारण बच्चों के पोषण पर विपरीत प्रभाव न पड़े इसके लिये सर्वोच्च न्यायालय के दिशा निर्देशों का ध्यान रखते हुये योजना के अन्तर्गत आच्छादित समस्त छात्रों को खाद्यान्न एवं खाद्य सुरक्षा भत्ता छात्रों/अभिभावकों को उपलब्ध कराया गया। कोविड काल में यह खाद्यान्न और खाद्य सुरक्षा भत्ता तीन चरणें में कुल 263 दिनों के लिये प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों को क्रमशः 26.3 किलोग्राम खाद्यान्न और 1302.50 रूपये तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों का 249 दिनों के लिये छात्रों को 37.35 किलोग्राम खाद्यान्न और 1849 रूपये प्रति छात्र के हिसाब से वितरित किया गया है। परिवर्तन लागत की

समस्त धनराशि छात्रों/अभिभावकों के बैंक खाते में आर0टी0जी0एस0/ एन0ई0एफ0टी0 के माध्यम से उपलब्ध करायी गयी है। खाद्यान्न के प्राधिकार पत्र छात्रों व अभिभावकों को कोविड गाइड लाइन का पालन करते हुये समय–समय पर उपलब्ध कराये गये हैं। इस प्राधिकार पत्र के आधार पर स्थानीय कोटेदार से छात्रों/अभिभावकों द्वारा खाद्यान्न प्राप्त किया गया है।

इस प्रकार कोरोना काल में भी बच्चों को कुपोषण से बचाने के सफल प्रयास किये गये हैं। प्रेरणा पोर्टल के माध्यम से सभी प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों में खाद्यान्न और परिवर्तन लागत के वितरण के अनुश्रवण की व्यवस्था सुनिश्चित की गयी है। कोविड काल में खाद्यान्न और परिवर्तन लागत छात्रों को उपलब्ध कराना एक कठिन प्रक्रिया थी जिसके अन्तर्गत प्रेरणा पोर्टल के माध्यम से विकास खण्ड स्तर पर विद्यालयवार छात्रों के विवरण सहित एक्सल शीट प्रधानाध्यापक को उपलब्ध करायी गयी और सहयोगी शिक्षकों द्वारा प्रत्येक छात्र/अभिभावक के बैंक खाता का विवरण भरकर उनसे खाता नम्बर का सत्यापन कराकर पुनः पोर्टल के माध्यम से वापस लेकर सभी बैंकों को विवरण भेजकर परिवर्तन लागत के वितरण का कार्य कराया गया।

कोविड काल में मध्यान्ह भोजन के अन्तर्गत परिवर्तन लागत के रूप में 3 चरणों में कुल एक करोड़ छियासी लाख बच्चों के खाते में दो हजार छः सौ तिहत्तर करोड़ रूपये प्रेषित किये गये हैं। ❑

प्राथमिक विद्यालयों में पोषण हेतु दिया गया खाद्यान्न एवं परिवर्तन लागत धनराशि

क्र0 सं0	कब से कब तक	कुल दिवस	खाद्यान्न की मात्रा कि0ग्रा0	परिवर्तन लागत धनराशि (रू0 में)
1	24.03.2020 से 30.06.2020 तक	76	7.6	374.00
2	01.07.2020 से 31.08.2020 तक	49	4.9	243.50
3	01.09.2020 से 28.02.2021 तक	138	13.8	685.00
	कुल योग–	2.63	26.3	1302.50

उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पोषण हेतु दिया गया खाद्यान्न एवं परिवर्तन लागत धनराशि

क्र0 सं0	कब से कब तक	कुल दिवस	खाद्यान्न की मात्रा कि0ग्रा0	परिवर्तन लागत धनराशि (रू0 में)
1	24.03.2020 से 30.06.2020 तक	76	11.4	561.00
2	01.07.2020 से 31.08.2020 तक	49	7.35	365.00
3	01.09.2020 से 09.02.2021 तक	124	18.6	923.00
	कुल योग–	2.49	37.35	1849.00

मोबाइल ऐप के प्रयोग से शिक्षण को सहज और रूचिकर बनायें

कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षा की उपयोगिता और महत्ता सर्वविदित है। इस अवधि में ऑन लाइन शिक्षा को प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के लिये कैसे सहज और उपयोगी बनाया जाय यह सबसे बड़ी चुनौती है। इस चुनौती को स्वीकार कर कुछ शिक्षकों ने अपनी प्रतिभा और खोजी प्रवृत्ति का उपयोग करते हुये अनेक मोबाइल ऐप का उपयोग कर छोटे बच्चों के लिये शिक्षण प्रक्रिया को सहज और रूचिकर बनाया है। ऐसे ही प्रतिभाशाली शिक्षक हैं श्री आशीष श्रीवास्तव जो स्टेट रिसोर्स ग्रुप जनपद बस्ती में तैनात है। आपने अनेक ऐप का उपयोग करते हुए छोटे बच्चों को शिक्षण पद्धति से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। बच्चों के लिये अनेक वीडियो, एनीमेटेड कामिक्स और एनीमेटेड वीडियों बनाने की कार्यशाला आयोजित कर आपने सहयोगी शिक्षकों को भी इस कला में निपुण बनाया है। आपके इस प्रयास का लाभ अनेक छात्र उठा रहे हैं। आशीष श्रीवास्तव जी ने कुछ ऐसे ऐप का विवरण भी दिया है जो अध्यापकों को ऑनलाइन शिक्षण में मदद कर सकते हैं। आपके द्वारा प्रयोग किये गये ऐप इस प्रकार है:–

1– **ट्वीन क्राफ्ट ऐप:–** यह ऐप एनीमेटेड वीडियो बनाने में सहायक है जिसे सभी बच्चों और अभिभावकों ने काफी पसंद किया है। इस प्रकार के वीडियों को बनाने में आपके पास एक स्टोरी होनी चाहिए। आप किसी पिक्चर या स्लाइड का भी उपयोग कर सकते हैं। आप उस शैक्षिक स्टोरी में अपने हिसाब से डायलॉग इंसर्ट कर सकते हैं। किसी भी बैकग्राउंड को भी अपने हिसाब से आप चुन सकते हैं। यह डायनमिक वीडियो बनाने के लिए एक बेहतरीन ऐप है। पूरे पाठ्यक्रम को ट्विन क्राफ्ट ऐप से तैयार किया जा सकता है और सभी बच्चे इसे बेहद पसंद करेंगे।

2– **कॉमिक्स एण्ड कार्टून मेकर:–** इस ऐप में एनिमेटेड करैक्टर के साथ–साथ हम किसी पाठ्यवस्तु को चुनकर उसकी स्लाइड बनाकर रूचिकर तरीके से सिखाते हैं। इस ऐप की सबसे खास बात यह है कि

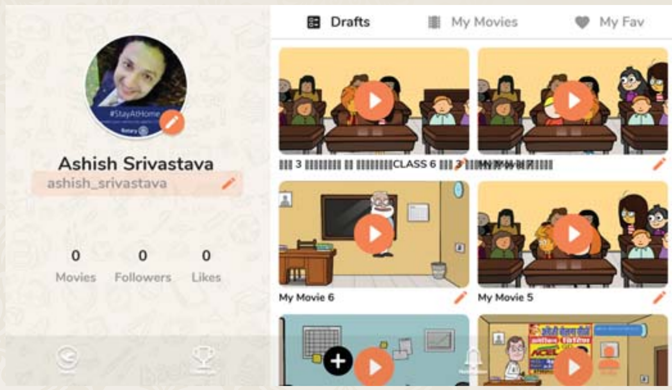

विद्यालय में पढ़ रहे बच्चों के भी फोटो को डायलॉग बॉक्स के साथ सेट करके हम पढ़ा सकते हैं साथ ही कैमरा ऑप्शन से तत्कालित फोटो को भी ऐड करके किसी शैक्षिक पाठ्यवस्तु से जोड़ा जा सकता है। मल्टीग्रेड ऑप्शन से करेक्टर्स की संख्या बढ़ाई जा सकती है। आशीष श्रीवास्तव के बनाए गए कुछ कॉमिक्स को जनपद के तमाम बच्चे रूचि लेकर पढ़ रहे हैं।

3– **कार्टून कॉमिक स्ट्रिप मेकर:–** गैलरी में मौजूद फोटो अथवा तत्काल फोटो लेकर उनको भी ऐड करके किसी शैक्षिक पाठ्यवस्तु से जोड़ा जा सकता है मल्टीग्रेड ऑप्शन में करेक्टर्स की संख्या बढ़ाई जा सकती है इस प्रकार के स्ट्रिप मेकर में बने कार्टून बच्चे बहुत पसंद कर रहे हैं।

4– **स्क्रीन रिकार्डर ऐप:–** स्क्रीन रिकॉर्डर का उपयोग करते हुए टीचिंग क्षमता को अपने कई गुना बढ़ाया है जैसे उदाहरण के लिए जब कोई बच्चा एक साधारण से ऐप का उपयोग कर रहा होता है जैसे 3डी ह्यूमन एनॉटमी, पी.एच.ई.टी. सिमुलेशन, वोकेबुलरी और भी बहुत तो ऐसे ऐप को डिस्प्ले करने से पहले अगर स्क्रीन रिकॉर्डर को ऑन कर लिया जाए और ऐप के इस्तेमाल के साथ–साथ स्क्रीन रिकॉर्डर से उस ऐप की प्रति एक ट्यूटर ट्यूटोरियल के रूप में विकसित हो जाती है और बच्चे ऐप की टफनेस से बाहर निकलकर उस पाठ्यवस्तु को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं।

5— सर्टिफिकेट मेकर ऐप तथा पिक्स आर्ट ऐपः— इस लॉकडाउन के समय बस्ती जनपद में कोरोना के मरीजों की संख्या बढ़ रही थी जिसके कारण घर में रहते हुए कैसे विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों, बच्चों और अभिभावकों को सक्रिय तथा प्रोत्साहित किया जाए यह प्रमुख समस्या थी। इसी उद्देश्य से आशीष जी ने अपने जनपद में दो अति महत्वपूर्ण जनपद स्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। प्रथम ऑनलाइन टैलेन्ट हंट प्रतियोगिता। इस प्रतियोगिता में जनपद के 14 ब्लॉक और नगर क्षेत्र के अधिकांश बच्चों ने प्रतिभाग किया। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी और खण्ड शिक्षा अधिकारियों ने इस प्रयास को सराहा। प्रोत्साहन हेतु सर्टिफिकेट मेकर ऐप और पिक्स आर्ट द्वारा आपने विजेता विद्यालयों को सर्टिफिकेट जारी किया जो उन विद्यालयों और बच्चों के लिए उत्साहवर्धक रहा। इसी प्रकार 20 मई को जनपद स्तरीय ऑनलाइन आर्ट्स प्रतियोगिता आयोजित की गयी जिसमें पूरे जनपद के सभी ब्लॉकों के बच्चों ने प्रतिभाग किया।इस प्रतियोगिता के प्रमाण पत्र इस ऐप से उसी दिन बना करके एक बार पुनः सभी को उपलब्ध कराये गये।

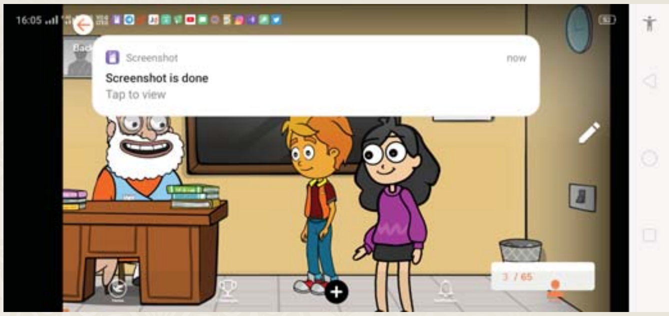

6— फिल्म मेकर तथा काइनमास्टर ऐपः— फिल्ममेकर और काइन मास्टर एप्लीकेशन द्वारा नीरस लगने वाले पाठ्यवस्तु को आकर्षक और रूचिकर कैसे बनाया जाए इस पर भी आशीष जी द्वारा बहुत काम किया गया और वर्तमान समय में ऐसी समझ विकसित हो गई है कि जब कोई पाठ्यवस्तु दिखती है तो कैसे और

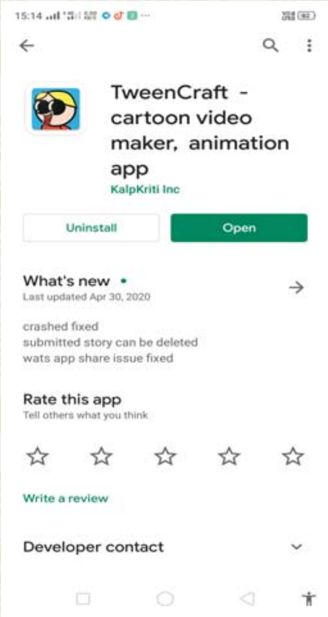

किसी मोबाइल एप्लीकेशन से इसको पिक्चराइज करना है तत्काल समझ जाते हैं। कुछ शैक्षिक वीडियो और मिशन प्रेरणा से सम्बन्धित कुछ जागरूकता वीडियो मैजिक शो आदि इस एप्लीकेशन से बनाए गए हैं और बच्चों और अध्यापकों द्वारा उसे सराहा जा रहा है। ❑

सौजन्य से

आशीष कुमार श्रीवास्तव

एस.आर.जी.

जनपद—बस्ती

"ऑनलाइन शिक्षण : रूचि से ज्ञान तक............"

कोविड 19 एक ऐसी महामारी है जिसने हमारे सामने कई चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं। चुनौतियाँ ही नये अविष्कारों का सृजन करती हैं। आपदा के समय नये अवसर और नई तकनीक का जन्म होता है। इस अवधि में हमने बहुत कुछ खोया है, लेकिन ऑनलाइन शिक्षण की विधा का जन्म भी इसी अवधि में हुआ है। कोरोना वायरस के चलते उत्पन्न हुई इस विषम परिस्थिति के कारण शिक्षकों के गहन–चिंतन–मनन और सृजन से शुरू की गई इन 'ऑनलाइन कक्षाओं' ने विद्यार्थियों का पढ़ाई से तारतम्य टूटने नहीं दिया।

ऑनलाइन कक्षाओं ने बच्चों को एक नियमिति और समयबद्ध दिनचर्या दी है जो उनके मानसिक स्वास्थ्य के लिये भी अच्छी थी और उन्हे व्यस्त रखने के लिए भी। हो सकता है कि एक सही दिनचर्या के अभाव में शहरी क्षेत्र के बच्चे सुबह देर से उठते और उठने के बाद का ज्यादातर समय टी.वी., मोबाइल या बीडियो गेम मे ही बिताते और ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे खेतों, गाँवों की गलियों और चौपालों में ही समय बिता देते जिसका कोई फायदा नहीं होता।

कुछ लोगों का मानना है कि ऑनलाइन कक्षाओं से बच्चों की आँखे प्रभावित हो रही हैं लेकिन मैक्स अस्पताल के नेत्र विशेषज्ञ डॉ. संजय धवन का मानना है कि स्क्रीन पर देखने से बच्चे के विजन पर कोई असर नहीं पड़ता है ना ही इससे बच्चों के चश्में का नंबर बढ़ता है, और न आँखे ही खराब होती हैं। हाँ, स्क्रीन पर बहुत देर तक देखने से आँखों में पानी आना जलन और आँखे लाल होने जैसी दिक्कतें हो सकती हैं लेकिन इसे कुछ छोटी–छोटी सावधानियाँ अपना कर दूर किया जा सकता है जैसे–

1. विषय वस्तु को स्क्रीन पर लगातार ना देखा जाये बल्कि थोड़े थोड़े समय बाद अन्तराल लेकर आँखों को आराम दिया जाय।
2. बैठने की मुद्रा सही हो।
3. स्क्रीन और बच्चे की आँखों का लेबल बराबरी पर हो और इसमें दो फीट की दूरी का ध्यान रखा जाय।

हम सभी जानते है कि यह मुश्किल समय है और इस वक्त कुछ कठिनाइयाँ तो होंगी ही। ऐसे में ऑनलाइन कक्षाएँ कई दिलचस्प शिक्षण सामग्री और शिक्षण विधाओ के साथ विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत की जा रही हैं। ऑनलाइन कक्षाओं के कुछ अलग फायदे हैं जैसे–

- ऑनलाइन कक्षा में शिक्षकों द्वारा कुछ कठिन प्रकरणों को विडियो द्वारा समझाया जाता है। जिससे प्रकरण समझना बहुत आसान हो जाता है। वीडियो को बराबर दोहराकर भी देखा जा सकता है।

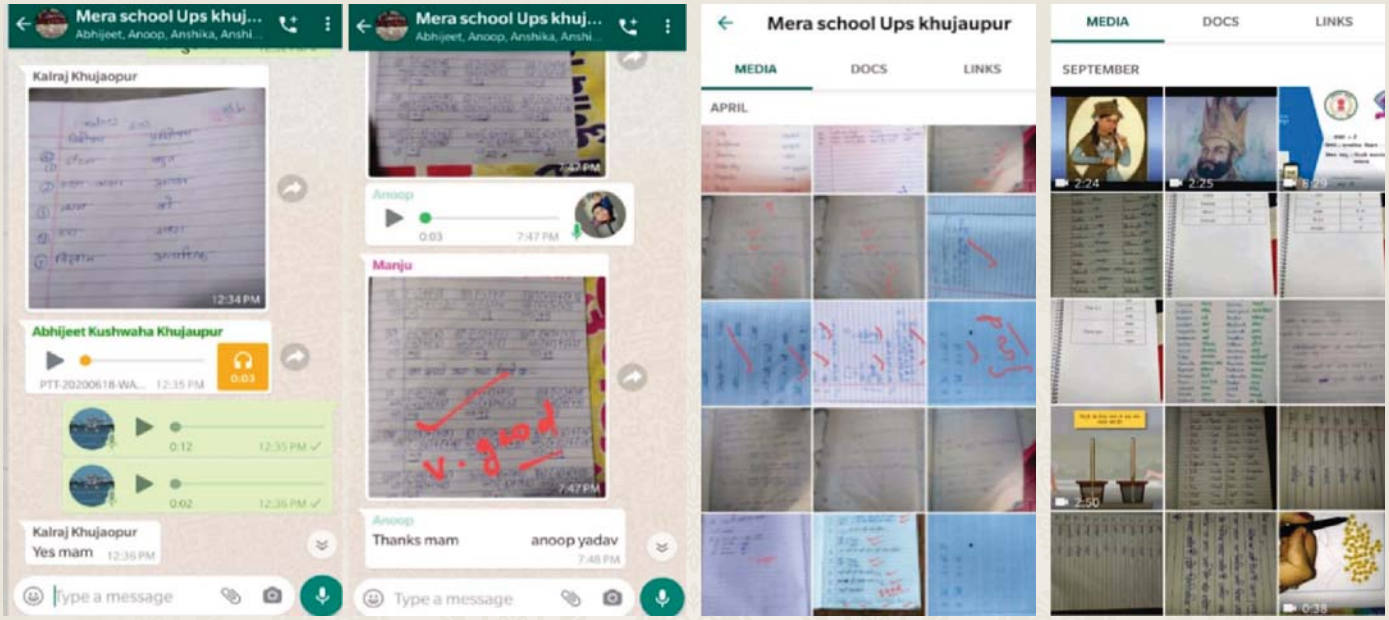

- शर्मीले स्वभाव के विद्यार्थी जो कक्षा में कुछ पूछने से हिचकते हैं वो ऑनलाइन कक्षा में अपने प्रश्न आसानी से मैसेज करके पूँछ लेते हैं और अपनी समस्या का समाधान पा जाते हैं।
- इसके अलावा कक्षा के कुछ छात्र जो अति उत्साही व वाचाल होते हैं वे कक्षा में व्यवधान पैदा करते रहते हैं पर ऑनलाइन कक्षा में ऐसा सम्भव नहीं है और सभी बच्चे एकान्त में एकाग्रचित होकर पढ़ पाते हैं।

शहरी क्षेत्रों के लिए ऑनलाइन शिक्षण उतनी नई अवधारणा नहीं है लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों के लिए यह एक नई अवधारणा है जिसमें ग्रामीण परिवेश के बच्चे भी दिलचस्पी और ऊर्जा के साथ भाग ले रहे हैं और लाभ उठा रहे हैं। ऑनलाइन आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं ने भी बच्चों को रचनात्मकता से जोड़े रखा है। मोबाइल में बच्चे ऑनलाइन कक्षाओं के साथ–साथ दीक्षा, रीड एलॉग, सम्पर्क बैठक जैसे ऐप से भी जुड पाते हैं। जिनके पास मोबाइल की उपलब्धता नहीं है वो शिक्षण हेतु ई–पाठशाला से जुड़ें हैं जो टी.वी. (डी.डी. उत्तर प्रदेश) और रेडियो के माध्यम से प्रसारित की जा रही है।

इस प्रकार वर्तमान कोरोना वायरस के समय शारीरिक दूरी बनाये रख कर भी छात्र अपने पाठयक्रम को पूर्ण कर पाने में समर्थ हो रहे हैं। ऑनलाइन शिक्षण से किसी भी परिस्थिति में, किसी भी समय अथवा जगह विद्यार्थी को पर्याप्त शिक्षण सामग्री सहज ही प्राप्त हो जाती है। ऑनलाइन शिक्षण ने विद्यार्थियों को व्यस्त रखते हुये उन्हें अवसाद से भी दूर रखा है और शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का तारतम्य टूटने नहीं दिया है।

आज छोटा हो या बड़ा, हर बच्चा मोबाइल और टी.बी. से जुड़ा रहना चाहता है। उनके इन्ही रूझानों का समन्वय करके ऑनलाइन शिक्षण की जो संरचना की गई है वह अत्यंत रूचिपूर्ण है। शिक्षण विधा जब जन रूचि से जुड़ जाये तो प्रकरण स्वतः आत्मसात हो जाते हैं। बच्चों पर इसका स्थाई प्रभाव पड़ता है और ज्ञान का स्वतः आत्मसात होना ही छात्रों के भविष्य निर्माण व जीवन कौशल निर्माण हेतु आवश्यक, सहायक व सार्थक है। ❑

पूजा यादव
सहायक अध्यापक
पूर्व माध्यमिक विद्यालय
खुजऊपुर, ब्लॉक सरसौलकानपुर नगर

गणित विषय में छात्रों की अरूचि कारण और निवारण

"यथा शिखा मयूराणां, नागानां मणयो यथा।
तद् वेदांगशास्त्राणां, गणितं मूर्ध्नि वर्तते।।"

वेदांग ज्योतिष में गणित की महत्ता को उपरोक्त श्लोक के माध्यम से व्यक्त किया गया है, आज वही गणित हमारे छात्रों को जटिल लगने लगी है। गणित विषय के कठिन प्रतीत होने के विभिन्न कारण है जैसे गणित विषय सीखने के प्रति बच्चों का रूझान काफी औसत देखा गया है। अधिकांश बच्चों को विषय कठिन लगता है, जिस कारण वे गणित सीखने में अरूचि प्रदर्शित करते हैं। गणित पढ़ाने हेतु शिक्षकों द्वारा प्रदत्त शिक्षण विधियाँ विषय को और जटिल बना देती है, जैसे कि प्रायः शिक्षक एक तरफा संप्रेषण (One way Communication) या लेक्चर विधि का प्रयोग करते हैं, जिससे बच्चे ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते हैं क्योंकि उनका मस्तिष्क प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षण हेतु बहुत विकसित नहीं होता है। एक तरफा संप्रेषण (One way Communication) के कारण शिक्षकों और छात्रों में परस्तर कोई सम्बन्ध स्थापित नहीं हो पाता है। अक्सर देखा गया है कि बच्चे शिक्षक से डरते हैं, प्रश्न पूछने में हिचकते हैं, जिसके कारण वे अक्सर कई दुविधाओं का निराकरण नहीं कर पाते। अवधारणात्मक स्पष्टता (Concept Celerity) न होने के कारण छात्रों का मनोबल गिर जाता है और वे स्व–संदेह (Self Doubt) से ग्रसित हो जाते हैं। गणित में कई संकेतों और प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है जैसे–जोड़, घटाना, गुणा, भाग आदि के लिये परन्तु कई बार बच्चे चिन्ह और संकेतों को स्पष्ट रूप से समझ नहीं पाते और यह अस्पष्टता उन्हें विषय से दूर भागने पर विवश करती है। शिक्षक छात्र अनुपात आदर्श रूप से 1:40 का होना चाहिए, परन्तु शिक्षकों की कमी से हम सभी परिचित हैं, जिसके कारण प्रायः शिक्षक प्रत्येक छात्र पर आवश्यक ध्यान नहीं दे पाता है। कई बार पाठ्यपुस्तक भी उपलब्ध नहीं हो पाती है। बिना किसी व्यवसायिक कोर्स (B.Ed., BTC) के शिक्षक विभिन्न सेवाएँ दे रहे हैं, जिसके कारण वे विधिवत् ज्ञान का संचार करने में असमर्थ हो जाते हैं। छात्रों में मूल्यांकन का डर सतत् व्याप्त रहता है, क्योंकि हमारी शिक्षा व्यवस्था प्रायः मूल्यांकन पर ही केन्द्रित है। अतः वह सीखने पर कम और अंक हासिल करने पर अधिक जोर देते हैं। शिक्षकों के लिए भी अध्यापन चुनौतीपूर्ण हो गया है क्योंकि वह कई तरह के गैर शैक्षिक कार्यों में संलग्न रहते हैं, जिस कारण बच्चों पर शत्–प्रतिशत ध्यान नहीं दे पाते हैं।

समस्या है, तो उसका समाधान भी होगा। एक जिम्मेदार नागरिक एवं जागरूक शिक्षक होने के नाते यह हमारा दायित्व है कि सिर्फ समस्या ही न गिनवाये बल्कि उसके समाधान पर भी बात करें। अतः Tangram, Fractional

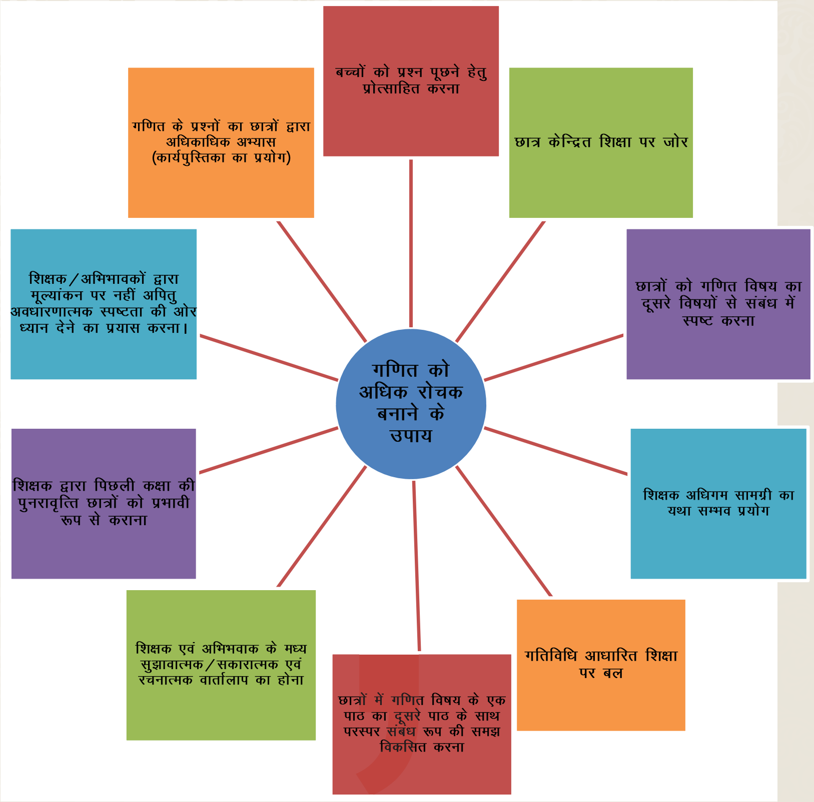

parts, 3D Models आदि एवं विभिन्न मनोरंजक टी.एल.एम. का प्रयोग कर शिक्षण को रोचक बनाया जा सकता है। गणित शिक्षण अधिक से अधिक गतिविधि आधारित होना चाहिए। गणित की शिक्षा छात्र आधारित होनी चाहिए। बच्चों को प्रोत्साहित किया जाय ताकि वे अधिक से अधिक प्रश्न पूछें। गणित विषय का दूसरे विषय से क्या सम्बन्ध है, यह भी समझाये जाने की आवश्यकता है। वैदिक गणित, गणित विषय को आसान बनाने में उपयोगी सिद्ध हो सकती है। गणित लैब तथा किट के प्रयोग से बच्चों को मनोप्रेरणा कौशल (pyschomotor skill) का विकास करने एवं गणित को रोचक तरह से सीखने में सहायता मिल सकती है। कहानी/कविता सुनाकर, खेल आधारित गतिविधि का प्रयोग कर हम बच्चों का रूझान गणित की ओर बढ़ा सकते हैं। जैसा कि हम जानते हैं, ''Practice makes a man perfect, या फिर कह सकते है कि करत–करत अभ्यास के जड़मत हो सुजान''। हम अभ्यास पर बल देकर गणित विषय में बच्चों को दक्ष बना सकते हैं, जिससे उनका मनोबल बना रहेगा और वे अधिक आत्मबल के साथ पठन–पाठन की ओर अग्रसर हो सकेंगे।

अन्त में, मैं इन विचारों के साथ अपनी बात को पूर्ण करना चाहूँगी कि गणित हमें सिखाती है कि हर समस्या का समाधान है। एक सकारात्मक दृष्टिकोण एवं ऊर्जावान शिक्षकों की कर्मठता और कार्यकुशलता से हम गणित विषय को अधिकाधिक रूचिकर बना सकते हैं। ❑

डॉ. मनीषा शुक्ला
प्रवक्ता (शोध)
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

कोरोना और विद्यालय

बिन शिक्षा है जीवन अपना, व्यर्थ और निर्मूल
शिक्षा की सुगंध फैलाता अपना प्यारा स्कूल।
स्कूल है बच्चोंकी प्यारी बगिया जिसमे पेड़ लगे हैं,
खूब सींचते हम सब मिलकर नन्हें फूल लगे हैं।
गुरुजन पेड़ का तना, मूल हैं, शिष्य सभी शाखाएं,
बड़े प्यार से, बड़े चाव से गुरुवर हमें पढ़ाएं।
शिक्षार्थ और सेवार्थ जाइए, है उपवन का नारा,
संस्कार के गुण हम पाते, ऐसा स्कूल हमारा।
शिक्षा की आक्सीजन बहे, सब बच्चे जिसको पाते,
प्राण वायु को पाकर बच्चे, अपने घर को जाते।
संस्कार, सभ्यता की ध्वजा पताका हम फहराएं
बहुत ज्ञान सब बच्चे पाते जब बगिया में आएं।
शिक्षा और स्वास्थ का उपवन, अपना संवर रहा था
बन कर अपना शिक्षक शिल्पी जीवन बदल रहा था।
बढ़ी मुसीबत कोरोना आया, सर्दी, खांसी और जुकाम।
उपवन जैसे विद्यालय में बना लिया अपना मुकाम।
सब विद्यालय बंद हुए, और शिक्षक सब हो गये अधीर
मकड़ी ने जाला फैलाया, स्कूलों में पड़ी जंजीर।
घर पर बैठे, सोच, सोचकर कुछ शिक्षक हो गए बीमार,
बच्चे घर बंद हो गए, अब क्या करते पालन हार।
कोरोना की मार से, चारो ओर मचा अब हाहाकार,
सोशल डिस्टेंसिंग से, हो गया शिक्षा का सब बंटाढार।
ऑनलाइन टीचिंग, वर्क फ्रॉम होम है बड़ी मजबूरी
हारेगा ये कोरोना जब हो सोसल डिस्टेंस जरूरी।
अंत अटल है सबका भैया कोरोना तो हारेगा
उपवन में आएगी हरियाली नया सवेरा आयेगा।

भगवत पटेल
जिला विद्यालय निरीक्षक,
जालौन

समावेशी शिक्षा

समावेशी शिक्षा एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जिसमें सामान्य बालक–बालिकायें और शारीरिक एवं मानसिक रूप से बाधित बालक–बालिकायें सभी एक साथ बैठकर एक ही विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते हैं। समावेशी शिक्षा बिना भेद–भाव के सभी बच्चों के समान अधिकार के सिद्धांत पर कार्य करती है। समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत शैक्षिक कार्यक्रम इस प्रकार निर्धारित किये जाते हैं कि ऐसे संस्थानों में विशिष्ट बालकों के अनुरूप प्रभावशाली वातावरण तैयार किया जा सके। विशिष्ट छात्रों को कुछ नियमों में छूट के साथ सामान्य छात्रों की अपेक्षा अधिक सहायता प्रदान किये जाने की कोशिश की जाती है। समावेशी शिक्षा का अर्थ है सामान्य तथा विशिष्ट बालकों का बिना किसी भेदभाव के एक ही विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करना। समावेशी शिक्षा विशिष्ट अधिगम के नये आयाम खोलती है।

समावेशी शिक्षा की विशेशतायें :–

1. समावेशी शिक्षा व्यवस्था में शारीरिक रूप से बाधित बालक, विशिष्ट बालक तथा सामान्य बालक एक साथ सामान्य कक्षा में शिक्षा ग्रहण करते हैं। इसमें बाधित बालकों को कुछ अधिक सहायता प्रदान करने की कोशिश की जाती है।
2. समावेशी शिक्षा विशेष शिक्षा का विकास नहीं है बल्कि पूरक है।
3. समावेशी शिक्षा में विशेष शिक्षा का ऐसा प्रारूप तैयार किया गया है जिसमें सभी बालकों को समान शिक्षा का अवसर प्राप्त हो और वे सामान्य लोगों की तरह जीवनयापन कर सकें। ऐसे शिक्षण संस्थानों में नियमों में कुछ छूट देकर प्रभावशाली वातावरण उपलब्ध कराया जाता है जिससे विशिष्ट बालक कम समय में ही अपने आपको सामान्य बालकों के साथ समायोजित कर सकें।
4. समावेशी शिक्षा समाज में विशिष्ट तथा सामान्य बालकों के मध्य स्वस्थ सामाजिक वातावरण तथा सम्बन्ध बनाने में जीवन के प्रत्येक स्तर पर सहायक सिद्ध होती है। इससे समाज में सद्भावना और आपसी सहयोग की भावना बढ़ती है।
5. समावेशी शिक्षा एक ऐसी व्यवस्था है जिसके अन्तर्गत विशिष्ट बालक भी सामान्य बालकों की तरह ही महत्वपूर्ण समझे जाते हैं।
6. समावेशी शिक्षा विशिष्ट बालकों को भी उनके व्यक्तिगत अधिकारों के साथ उसी रूप में स्वीकार करती है।
7. समावेशी शिक्षा विशिष्ट बालकों का जीवन स्तर ऊँचा उठाने एवं उनके नागरिक अधिकारों को सुरक्षित रखने का कार्य करती है।
8. समावेशी शिक्षा विभिन्न शिक्षाविदों, अध्यापकों, शिक्षण संस्थानों और अभिभावकों के सामूहिक अभ्यास पर आधारित है।
9. समावेशी शिक्षा शिक्षण की समानता तथा अवसर जो विशिष्ट बालकों को अब तक नहीं दिये गये हैं उनके मूल स्वरूप से शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक व्यवस्था है।

समावेशी शिक्षा समाज के सभी शारीरिक एवं मानसिक रूप से बाधित सभी बच्चों के लिये है। समावेशी शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक रूप से दिव्यांग, मानसिक बाधित सामाजिक रूप से बाधित अथवा विचलित और शैक्षिक रूप से बाधित बालकों तक पहुँच बनाकर उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ना है।

समावेशी शिक्षा की आवश्यकता :–

समावेशी शिक्षा आज के विकसित समाज की आवश्यकता है। समावेशी शिक्षा के माध्यम से ही हम देश के प्रत्येक नागरिक को शैक्षिक रूप से समर्थ बनाकर विकास की मुख्यधारा में सभी के योगदान को सुनिश्चित कर सकते हैं। समावेशी शिक्षा की आवश्यकता को बिन्दुवार इस प्रकार समझा जा सकता है।

- समावेशी शिक्षा बालकों के लिये एक ऐसा अवसर प्रदान करती है जिसमें दिव्यॉंग बालकों को सामान्य बालकों के साथ मानसिक रूप से प्रगति करने का अवसर प्राप्त हो।

- समावेशी शिक्षा में समानता के सिद्धान्त का अनुपालन करते हुये शैक्षिक एकीकरण सम्भव है।
- समावेशी शिक्षा में सामान्य तथा दिव्याँग बालक एक साथ सामान्य रूप से शिक्षा ग्रहण करते हैं जिससे उनके मध्य प्राकृतिक वातावरण का निर्माण होता है और उनमें एकता, भाईचारा तथा समानता की भावना उत्पन्न होती है।
- समावेशी शिक्षा व्यवस्था धन की मितव्यिता के सिद्धान्त पर आधारित है। यदि विशिष्ट बालकों को सामान्य बालकों के साथ शिक्षा न देकर अलग दी जायेगी तो उनके लिये अलग से विद्यालय बनाने में अधिक खर्च करना पड़ेगा साथ ही उनमें पृथकता का भाव उत्पन्न होगा।
- समावेशी शिक्षा से लघु समाज का निर्माण होता है क्योंकि इसमें हर तरह के बालक एक साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं जिससे उनमें नैतिकता, प्रेम, सहानुभूति, आपसी सहयोग जैसे गुणों का विकास होता है।
- समावेशी शिक्षा के द्वारा बच्चों में शिक्षण तथा सामाजिक स्पर्धा जैसी भावनाओं का विकास किया जा सकता है।

समावेशी शिक्षा के सिद्धान्त :–

समावेशी शिक्षा एक विशिष्ट शिक्षा प्रणाली है जिसमें समाज के सभी बच्चों का समान रूप से विकास हो के सिद्धाँत पर आधारित है। इस प्रणाली में निम्नलिखित क्रियाकलापों को अपनाना चाहिए।

- **वातावरण नियन्त्रण पूर्ण होना** – समावेशी शिक्षा में हर तरह के बालक एक ही कक्षा में पढ़ते हैं जहाँ विभिन्न प्रकार के वातावरण उत्पन्न होते हैं जिन पर नियन्त्रण रखते हुए एक ही वातावरण बनाये रखने का प्रयास किया जाता है।
- **विशिश्ट कार्यक्रमों द्वारा शिक्षा** – समावेशी शिक्षा के माध्यम से विशिष्ट कार्यक्रमों का आयोजन कर शिक्षा दी जाय जिससे विशिष्ट कार्यक्रम में भाग लेकर उनके अधिगम स्तर को बढ़ाया जाता है।
- **माता–पिता का सहयोग :–** समावेशी शिक्षा में शिक्षकों के साथ विशिष्ट बालकों के माता–पिता भी उनकी शिक्षा में सहयोग प्रदान करते हैं। उनके सहयोग से बच्चों के अधिगम स्तर को बढ़ाया जा सकता है।
- **व्यक्तिगत विभिन्नता** – विशिष्ट बालकों को शिक्षा ग्रहण करने में यदि परेशानी हो तो उनकी विशिष्टता के आधार पर व्यक्तिगत शिक्षा दी जाती है ताकि उन्हें सामान्य बालकों की तरह बनाया जा सके।
- **लघु समाज का निर्माण** – समावेशी शिक्षा समाज को जोड़कर एक लघु समाज का निर्माण करती है।

परिषदीय विद्यालयों में समावेशी शिक्षा और समर्थ कार्यक्रम

बेसिक शिक्षा विभाग के अन्तर्गत समस्त प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में समावेशी शिक्षा प्रणाली बिना किसी भेद–भाव के अपनाई गयी है। बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा प्रदेश के 6–14 वर्ष के सभी दिव्याँगों का विद्यालय में नामांकन कराकर उनको शिक्षित करने के साथ–साथ चिकित्सीय जाँच, कृत्रिम अंग और उपकरण व्यवस्था छात्रवृत्ति और विशेष आवश्यकता वाले दिव्यांगों के सहयोगी का व्यय भी वहन किया जाता है।

समावेशी शिक्षा की गतिविधियों के प्रभावी संचालन एवं शतत् अनुश्रवण हेतु राज्य परियोजना कार्यालय द्वारा राज्य स्तर पर ''समर्थ तकनीकी प्रणाली'' विकसित की गयी है। 'समर्थ' मोबाइल बेस्ड इंटीग्रेटेड प्रणाली द्वारा वर्ष 2020–21 में प्रदेश में 6–14 आयु वर्ग के कुल 316058 दिव्यांग बच्चों को समावेशी शिक्षा प्रदान किये जाने हेतु चिन्हित एवं पंजीकृत किया गया। वर्ष 2021–22 में 6–14 आयु वर्ग में दिव्यांग बच्चों का शत–प्रतिशत चिन्हांकन, नामांकन एवं शिक्षण–प्रशिक्षण सम्बन्धी समस्त गतिविधियां 'समर्थ' प्रणाली पर आधारित होंगी।

समस्त दिव्यांग बच्चों का पंजीकरण एवं शत–प्रतिशत नामांकन का विवरण समर्थ एप पर फीड किया जायेगा। प्रेरणा लक्ष्य के अनुसार लर्निंग आउटकम्स की सम्प्राप्ति हेतु दिव्यांग बच्चों का वैयक्तिक शैक्षिक कार्यक्रम (आई.ई.पी.) तैयार किया जायेगा। मेडिकल एसेसमेंट कैम्प, मेजरमेंट एवं डिस्ट्रीब्यूशन कैम्प में चिन्हित बच्चों की फीडिंग और सहायता उपलब्ध करायी जा रही है। दिव्यांग बच्चों को उपलब्ध कराये गये उपकरण/यंत्र, स्टाइपेण्ड आदि की डेटा इंट्री की जाती है। फिजियोथेरेपी हेतु चिन्हित बच्चों की फीडिंग एवं थेरेपी एक्टिविटी का मूल्याँकन एवं विवरण भी रखा जाता है। होम बेस्ड एजूकेशन हेतु बच्चों का चिन्हांकन एवं नामांकन किया जा रहा है।

समावेशी शिक्षा में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों की भूमिका महत्वपूर्ण है। उनके द्वारा दिव्यांगों के लिये नियुक्त स्पेशल एजूकेटर्स फिजियोथेरेपिस्ट की मासिक समीक्षा बैठक आयोजित की जाती है। जिसमें उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों की मानीटरिंग, डेटा फीडिंग, शारदा पोर्टल पर दिव्यांग बच्चों के नामांकन का मूल्यांकन किया जाता है। इससे समावेशी शिक्षा में गुणवत्ता को बढ़ावा मिलता है। इसी प्रकार खण्ड शिक्षा अधिकारी, नोडल टीचर और स्पेशल एजूकेटर्स भी अपने–अपने स्तर पर कार्य सम्पन्न करते हैं। दिव्यांग बच्चों के लिये चिन्हित स्पेशल एजूकेटर्स माह में कम से कम 20 दिन क्षेत्र भ्रमण कर दिव्यांग एवं आउट आफ स्कूल बच्चों की शिक्षा के लिये कार्य करते रहते हैं। स्पेशल एजूकेटर्स दिव्यांग छात्रों का मेडिकल एसेसमेन्ट, मैनेजमेन्ट और डिस्ट्रीब्यूशन कैम्प के आयोजन में सहायता प्रदान करते हैं और उनका आंकड़ा भी पोर्टल पर उपलब्ध कराते हैं। सभी स्पेशल एजूकेटर्स समय–समय पर बच्चों को सहायक उपकरण, ब्रेल पाठ्य पुस्तकें आदि आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराते हैं। ❑

डॉ. के.बी. त्रिवेदी

सम्पादक

पुस्तक समीक्षा

किलकारी

मिशन शिक्षण संवाद के अन्तर्गत श्रीमती रीना, सहायक अध्यापिका, प्राथमिक विद्यालय सालेहनगर, विकास खण्ड जानी, जनपद–मेरठ की बालमन को टटोलती अनूठी रचनाओं का संकलन ''किलकारी'' का प्रकाशन एक नई और प्रेरक पहल है। संकलन की शुरूआत एक संकल्प के साथ ''आओ हाथ से हाथ मिलायें, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ायें'' से की गयी है। कुल तेरह छोटी–छोटी कवितायें बाल मनोविज्ञान के हर पहलू को छूती हैं। देश प्रेम का पाठ पढ़ाती पहली कविता प्यारा देश रचनाकार का देश के प्रति आदर और सम्मान का प्रतीक है। वहीं अन्य कविताओं में जिन विषयों को प्रमुखता से उठाया गया है, उनमें पर्यावरण, जीव–जन्तु, कविता के माध्यम से संख्या ज्ञान, गणित के कुछ रोचक सवाल, अक्षर ज्ञान और बाल मन की उड़ान 'आसमान में, उड़ी पतंग' बच्चों को कविताओं के माध्यम से भोजन, पानी के महत्व और आस–पास की जानकारी भी दी गयी है।

बाल कविताओं की भाषा सरल और ग्राह्य है। बच्चों को यह आसानी से याद होने वाली हैं। पुस्तक में कविताओं के साथ बनाये गये कार्टून, स्केच रोचक और आकर्षित करने वाले हैं। रचानाकर श्रीमती रीना का यह संकलन उनके निर्मल मन, बालमनोविज्ञान के ज्ञान और रोचक शैली का द्योतक है। छोटे–छोटे बच्चे निश्चित ही इन कविताओं को कंठस्थ कर अपनी रचनात्मक सोच का विकास कर पायेंगे। ❑

डॉ. के.बी. त्रिवेदी

सम्पादक

शिक्षा की ओर बढ़ते दिव्यांगो के कदम

दिव्यांग बच्चो के विषय में एक भ्रान्ति सामाजिक रूप से व्याप्त है कि ये बच्चे कुछ करने में सक्षम नहीं हैं। इसी विचार के साथ पल्लवित होते हैं ये दिव्यांग बच्चे। हमारे पारिवारिक और सामाजिक ताने बाने के बीच पलते ये दिव्यांग बच्चे जिन्हें हमसे अधिक निवेश और ध्यान की आवश्यकता है हमारी पिछड़ी सोच के बीच अक्सर उपेक्षा का शिकार होते नजर आते हैं। किसी भी प्रकार की दिव्यांगता से ग्रसित होने पर इनके प्रति हमारा दृष्टिकोण सामान्य बच्चों की अपेक्षा बदला हुआ नजर आता है। पारिवारिक रूप से अगर हम देखें तो पाते हैं कि इनको वृद्धावस्था के सहारे के रूप में नहीं देखा जाता है और समाज में इनके प्रति कुछ न कर पाने वाली हीन भावना मूर्त रूप लेती नजर आती है। वर्तमान परिवेश में बहुत से परिवार अपवाद भी हैं। जिन्होंने अपनी क्षमता से आगे जाकर अधिक से अधिक संसाधनों का प्रयोग कर इनकी प्रतिभा और व्यक्तित्व को निखारने का काम किया है। इस मिथक को तोड़ने का कार्य किया है। यू.पी.एस.सी. सिविल सर्विसेस की परीक्षा में सामान्य वर्ग में देश की पहली दिव्यांग महिला टॉपर इरा सिंघल जी ने। इरा ने आई.ए.एस. की पहली परीक्षा 2010 में दी और दिव्यांगता के आड़े आने पर हार नहीं मानी कोर्ट तक गई और जीत हासिल कर दिखाया। उनके हौसलों को देखते हुये यह सार्थक ही है कि–

मंजिल उन्हीं को मिलती है जिनके सपनो में जान होती है
पंखों से कुछ नहीं होता हौसलों से उड़ान होती है

कुछ इसी तरह नेत्रहीन केम्पा, जयंत मनकले और यू.पी. अमरोहा के सतेंद्र सिंह इन सबने सिविल सर्विसेस परीक्षा में इतिहास रचने का कार्य किया है। वर्तमान में बच्चों के लिए अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अंतर्गत दिव्यांगता वाले बच्चों सहित सभी बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की गई है। बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा चलाया जा रहा सर्व शिक्षा अभियान यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक दिव्यांग बच्चे को चाहे वह किसी भी प्रकार की दिव्यांगता से प्रभावित हो, उसे उद्देश्यपूर्ण और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दी जाय। उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा विभाग के विभिन्न जनपदों में विशिष्ट आवश्यकता वाले (दिव्यांग) बच्चों को उनके घरो में स्पेशल एजुकेटर्स व् फिजियोथेरेपिस्ट के माध्यम से शिक्षित करने की व्यवस्था की जा रही है। स्पेशल एजुकेटर्स के द्वारा मिशन प्रेरणा के तहत निर्धारित लर्निग आउटकम्स तथा दिव्यांग बच्चों के लिये दैनिक जीवन के लिए उपयोगी कौशल को ध्यान में रखते हुए शिक्षण के साथ–साथ प्रशिक्षित भी किया जा रहा है। इस प्रकार के बच्चों का पता लगाने के लिए शारदा पोर्टल पर आउट ऑफ स्कूल दिव्यांग बच्चों की डाटा एंट्री की जाती है और गंभीर रूप से दिव्यांगता से प्रभावित बच्चों को घर पर ही शिक्षा देने के लिए चिन्हित किया जाता है। इस प्रकार के बच्चों का पास के ही प्राथमिक अथवा उच्च प्राथमिक विद्यालयों में नामांकन कराया जायेगा और समर्थ तकनीकी प्रणाली में उनका डाटा दर्ज किया जा रहा है। आवश्यक शिक्षण सामग्री, किताबें व सहायक उपकरण उपलब्ध कराने के साथ ही दैनिक क्रियाकलाप पर और वैयक्तिक शैक्षणिक योजना के आधार पर बच्चों के लर्निग आउट कम के मूल्यांकन पर प्रभावी ध्यान दिया जा रहा है। मेरा मानना है कि इन विशिष्ट आवश्यकता वाले दिव्यांग बच्चों को यदि हम सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक रूप से सक्षम बनाने सफल होते हैं तो वास्तविक रूप में इससे बड़ी कोई पूजा दूसरी नहीं हो सकती है। सरकार पूर्ण मनोयोग से इन्हें सशक्त बनाने की योजना बना चुकी है। अब हमें भी शिक्षक के रूप में अपना दायित्व निर्वहन करना है। समावेशी शिक्षा की धारा में हमें आज किसी भी वर्ग के बच्चों को पीछे नहीं छोड़ना है। सबको साथ लेकर आगे बढ़ना है और शीघ्र ही अपने प्रदेश को प्रेरक प्रदेश के रूप में स्थापित कर सम्पूर्ण देश में उत्तर प्रदेश की बेसिक शिक्षा को माडल के रूप में आयामित करना है। ❑

अनुज कुमार शर्मा
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय शिवनगर, ब्लॉक–भुता (बरेली)

खामोश सा अफसाना

शेफाली से बिछड़े अतुल को दस साल से ज्यादा हो गए थे पर अतुल उसे एक पल भी नहीं भूल पाया। उसकी निगाहें हर जगह शेफाली को ही ढूंढती रहती।

इस बीच अतुल की शादी हो गई और वो दो प्यारे से बच्चों का पिता भी बन गया पर शेफाली... कल ही एक साथी कर्मचारी ने बताया था कि सोशल नेटवर्किंग के माध्यम से आप किसी से भी जुड़ सकते हैं, देख सकते हैं बातें कर सकते हैं। अतुल के दिल में आशा की किरण जाग गई, शायद दुनिया की इस भीड़ में शेफाली से दुबारा मुलाकात हो जाये और दूसरे ही दिन न जाने क्या सोचकर अतुल ने इ.एम.आई. वाला एक स्मार्ट फोन ले लिया। उसकी उंगलियां हर रोज शेफाली के नाम को ढूंढ़ती रहती पर...शेफाली नहीं थी, कही नहीं थी। नम्रता ने एक दिन दबे स्वर में कहा भी था।

'वैसे भी घर के बहुत सारे खर्चे हैं, बच्चों के स्कूल की फीस भी अभी जमा नहीं हुई ...इसकी क्या जरूरत थी।'

'क्या अब तुम बताओगी मेरी क्या जरूरत है क्या नहीं।'

अतुल की बात सुन नम्रता का चेहरा उतर गया। नम्रता की गलती सिर्फ इतनी ही तो थी, उसने मुझ से शादी की थी। अतुल को खुश रखने के लिए उसने कितनी कोशिश की थी, शादी के वक्त किसी ने उससे कह दिया था कि अतुल को मीठा खाना बहुत पसंद है। माँ–पापा को मधुमेह था पर वो बिना नागा उसके खाने के डिब्बे में मीठा रखना नहीं भूलती। शायद वो हमारे सम्बन्धों के बीच आई इस कड़वाहट को मीठे से दूर करने की नाकाम कोशिश कर रही थी। अतुल जब ऑफिस में टिफिन बॉक्स खोलता सहकर्मी लपक कर उसकी तरफ चले आते। नम्रता के हाथों के स्वादिष्ट खाने के सब कायल थे पर जिसको खाना पसंद आना चाहिए वो मुँह में एक कौर भी न डालता

''...और अतुल बाबू आज भाभी जी ने क्या भेजा है?''

अतुल चुपचाप डिब्बा साथी कर्मचारियों की तरफ सरका देता और मिठाई चपरासी के हाथों में दे देता, न जाने क्यों एक अजीब सा सुकून उसके चेहरे पर पसर जाता। कभी–कभी उसे ऐसा लगता कि वो जैसे इस तरह से नम्रता को शादी करने की सजा दे रहा हो।

''मैं नहीं मना कर पाया तो क्या नम्रता मुझ से शादी करने से मना नहीं कर सकती थी। कहाँ मैं और कहाँ वो। एक बार तो सोचना चाहिए था पापा को...पर नहीं ऐसी लड़की गले से बांध दी जिसका जीवन घर से शुरू होता है और घर पर खत्म होता है। पापा की दवाई, माँ की एक्सरसाइज, बच्चों का स्कूल, बिजली का बिल, मौसी जी के पोते के मुंडन में नेग–व्यवहार हर चीज उंगलियों पर रहती हैं। क्या ऐसी लड़की चाहिए थी उसे जिसे दुनिया की तो फिक्र है पर अपने पति को क्या पसन्द है, इसका ख्याल भी नहीं।

शादी की शुरुआती दिनों में नम्रता अतुल की गाड़ी के हॉर्न पर दौड़ी चली आती, कमर तक झूलती चोटी, आँखों में काजल, करीने से कढ़े बाल, माथे पर सिंदूरी बिंदी का रंग अतुल के आगमन की सूचना से और भी सिंदूरी हो जाता। उसकी खुशी चेहरे से टपकती थी। एक बार उसने हुलस कर पूछा था, 'चमचम कैसा बना था, मम्मी से पूछकर बनाया था।' और अतुल ने कितनी बेदर्दी से कहा था, 'पता नहीं, मुझे मीठा पसन्द नहीं ऑफिस के चपरासी को दे दिया था, कैसा बना कल चपरासी से पूछकर बताऊँगा। नम्रता की आँखे छलछला गई, पर अतुल का दिल नहीं पिघला।

मन की झुंझलाहट सम्बन्धों पर साफ दिखती थी। पापा सब चुपचाप देख रहे थे और समझ भी रहे थे, पर जवान बेटे से कहते भी तो क्या। नम्रता पापा की पसन्द थी, धीरे–धीरे वो सबकी पसन्द बन चुकी थी पर जिसका हाथ थामे वो इस घर में आई थी वो उसकी पसन्द कभी न बन पाई। पापा ने एक दिन अतुल से कह भी दिया,

''अतुल पानी पर लिखा इंसान खुद पढ़ता है, पर पत्थर पर लिखा दुनिया पढ़ती है अब तय तुम्हें करना है कि अपनी जिंदगी की कहानी तुम पानी पर लिखना चाहते हो या पत्थर पर।'' अतुल की झुंझलाहट और भी बढ़ जाती, क्या था नम्रता में ऐसा जो हर आदमी उसके नाम की माला जपता है। वो...वो शेफाली के पैर की धूल भी नहीं है।

अतुल शेफाली को कभी भूल नहीं पाया, शेफाली उस चांद की तरह थी जिसे न पा पाने की कसक अतुल को जीवन भर सालती रही। दिन गुजर रहे थे पर अतुल की जिंदगी मानो थम सी गई थी। वो मशीन की तरह काम करता, इन दिनों उसका अवसाद और भी बढ़ता जा रहा था। वो घर से बाहर रहने के बहाने ढूंढने लगा था, बॉस से कहकर वो ओवर टाइम भी करने लगा। वो नम्रता की परछाई से भी दूर भागने लगा था। आज ऑफिस में सुबह से ही बहुत चहल–पहल थी। एक नई महिला बॉस की नियुक्ति हुई थी, सुना था बड़ी सुंदर और तेज तर्रार है। एक साथी मित्र ने चुटकी लेते हुए कहा भी था। ''चलो ऑफिस में मन लगा रहेगा।''

अतुल मुस्कुरा कर रह गया। सब नए बॉस से मिलने उसके कक्ष की तरफ चल पड़े, उसी भीड़ में अतुल भी था। नई बॉस सभी का अभिवादन स्वीकार कर रही थीं।

''थैंक यू थैंक यू वेरी मच, अच्छा लगा आप सभी से मिलकर उम्मीद करती हूं आप लोगों को भी अच्छा लगा होगा।''

सबके चेहरे पर एक मुस्कान आ गई, अपने नई बॉस से मिलकर एक–एक कर सभी कमरे से बाहर निकल रहे थे।

''मिस्टर अतुल!.. आप यहीं रुकें आपसे कुछ जरूरी बात करनी है।''

''जी!.... शिफाऽऽऽ!!''

शब्द गले में अटक से गए, शेफाली को अपने बॉस के रूप में देखकर अतुल आश्चर्य में था। उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था, कि शेफाली से इस तरह से मुलाकात होगी। सब के जाने के बाद शेफाली तेजी से उठी और पर्दा खींचकर अतुल की बगल वाली कुर्सी पर बैठ गई।

''व्हाट ए प्लेजेंट सरप्राइज अतुल!!.. तुम यहाँ मैं तो सोच भी नहीं सकती थी कि तुमसे जीवन में इस तरह मुलाकात होगी और सुनाओ शादी–वादी की कि नहीं।''

शेफाली एक सांस में बोलती चली गई, अतुल के चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कुराहट फैल गई। अतुल को अपनी आँखों पर भरोसा नहीं हो रहा था जिस लड़की को उसने इतनी शिद्दत से चाहा था उससे इस तरह मुलाकात होगी। कुछ भी तो नहीं बदला था, शेफाली में, वैसी ही चंचल, शोख और बिंदास थी। बिना बाँह के ब्लाउज पर प्योर शिफॉन की साड़ी को उसने बड़े सलीके से लपेट रखा था। तीर कमान सी भौहों के बीच एक छोटी सी गोल काली बिन्दी, लाल रंग की लिपस्टिक से रंगे होंठ और बालों को करीने से काढ़कर बनाया हुआ फ्रेंच नॉट उसके चंचल चेहरे को एक अलग आभा दे रहे थे। कान के पास लटकती लटें मानो उसके चेहरे के साथ आँख–मिचौली कर रही थीं।

''हेलो मिस्टर अतुल!!.. मैं आपसे ही बात कर रही हूँ कहां खो गए यार.. आदत नहीं गई तुम्हारी... कॉलेज में भी तुम ऐसे ही बात करते–करते न जाने किस दुनिया में खो जाते थे और सुनाओ सब कहाँ हैं। राहुल, विनय, संतोष और वह जया, गीता और हाँ सीमा की शादी कहां हुई।''

''सब ठीक है... राहुल, संतोष जॉब में हैं...विनय अपने पापा के साथ बिजनेस संभाल रहा है। मिल तो नहीं पाता पर फोन से कभी–कभी बातचीत हो ही जाती है।''

''गुड यार...अर्चना कहाँ है।''

''तुम्हारे जाने के बाद एक–एक करके सब की शादी हो गई। शादी के बाद उनसे कोई कांटेक्ट नहीं हो पाया।''

''क्यों !!..आजकल के जमाने में इतने सारे तरीके हैं फिर भी...''

शेफाली ने बड़े ही आश्चर्य अतुल की तरफ देखा,

''शेफाली शादी के बाद जिंदगी इतनी आसान नहीं होती है। हो सकता हो उसके ससुराल वाले इतनी खुली सोच के न हो, इस कारण वह कॉलेज के मित्रों से संपर्क नहीं रख सकी। कभी–कभी पतियों की भी रजामंदी नहीं होती ऐसे में किया भी क्या जा सकता है। छोड़ो यह सब बातें ...''

न जाने क्यों शेफाली का चेहरा गुस्से से लाल हो गया।

''नफरत है मुझे ऐसी सोच से..!!''

'क्या हुआ शेफाली तुम इतनी नाराज क्यों हो गई, इसमें नया भी क्या है। यह तो हमारे समाज में हमेशा से होता आया है क्या तुम्हारे पति ने तुम्हें कभी नहीं रोका...'

शेफाली के चेहरे का रंग बदल गया।

''कुछ और बात करते हैं अतुल...''

"कहाँ खो गए अतुल.."

"मेरी छोड़ो शेफाली तुम अपनी बताओ...क्या करते हैं तुम्हारे पति और बच्चे।"

"पति... माई फुट!!..मुझे इस शब्द से भी नफरत है।"

शेफाली का चेहरे का रंग बदल गया, शेफाली उठी और धम्म की आवाज के साथ कुर्सी पर बैठ गई। वो गुस्से से कांपने लगी। गुस्से से साड़ी के छोर को कभी उंगलियों में लपेटती तो कभी खुला छोड़ देती। कमरे में गहन सन्नाटा पसर गया। शेफाली की हालत देखकर अतुल की आगे पूछने की हिम्मत नहीं हुई। तब शेफाली ने ही चुप्पी तोड़ी,

"अतुल...विराट और मैं दो साल पहले ही अलग हो चुके हैं।"

"मैं माफी चाहता हूँ, मुझे पता नहीं था कि तुम्हारा तलाक हो चुका है।"

"तुम क्यो माफी मांग रहे हो, जिसे माफी मांगनी चाहिए उसे तो इस बात का अहसास भी नहीं था कि मैं पल–पल कैसे जी रही थी।

अतुल को समझ में नहीं आ रहा था कि इस परिस्थिति में वह क्या करें और क्या न करे। वह अजीब सी स्थिति में उलझ गया था पर शेफाली उसकी मनोस्थिति से अनजान अपनी ही रौ में बोलती जा रही थी।

"अतुल!!.. विराट एक मल्टीनेशनल कंपनी में बहुत बड़े पद पर थे। शादी के वक्त मैंने सोचा था कि हम दोनों जॉब करेंगे। ऐश से जिंदगी कटेगी पर जानते हो अतुल... विराट और उसकी फैमिली... ओ माय गॉड...हॉरबिल है सब के सब। विराट अपने माता–पिता के इकलौते बेटे हैं। छोटी बहन की शादी नोएडा में हुई है। विराट और उसका परिवार मुझसे चाहते थे कि मैं घर में बैठ कर गृहस्थी संभालूं। गृहस्थी.. हम्म... यही सब करने के लिए क्या मैंने इतनी पढ़ाई की थी। उस घर में कोई चैन से सोने भी नहीं देता था। 8.00 बजे सुबह मम्मी जी के मंदिर की घंटी बजने लगती। पापा शेफाली बेटा 8.00 बज गए हैं कह–कह कर घर सर पर उठा लेते।"

न जाने क्यों अतुल के चेहरे पर एक मुस्कान आ गई।

"जानते हो अतुल विराट के पापा एकदम फिल्मी टाइप वाले ससुर थे। उन्हें पार्वती और तुलसी टाइप वाली बहू चाहिए थी। जानते हो क्या कहते थे। शेफाली हम लोगों के सामने नहीं तो कम से कम रिश्तेदारों के सामने पल्ला कर लिया करो। बहू पल्लू करने वाली चाहिए थी तो ले आते किसी छोटे शहर या गांव की लड़की... मेरी जिंदगी क्यों बर्बाद कर दी। जानते हो क्या कहते थे, शेफाली बेटा चार लोग का ही तो परिवार है विराट को ऑफिस से आ जाने दो, साथ मिलकर खाते हैं।

अरे यार भूख लगी है तो खाओ टीवी देखो और अपने अपने कमरे में जाकर सो जाओ पर नहीं... अतुल हमारी तो कोई पर्सनल लाइफ ही नहीं थी, कोई स्पेस नहीं देता था। झक्क मारकर सबके साथ खाना खाना पड़ता, जब विराट से कहती तो विराट भी हंसकर टाल देते। मैडम इसे ही परिवार कहते हैं इन सब छोटी–छोटी बातों से ही प्यार बढ़ता है। सच बताऊं तो मेरा खून खौल जाता, ऊपर से विराट की छोटी बहन जब देखो तब... हर दूसरे महीने टपक पड़ती। आते ही फरमाइश कार्यक्रम शुरू, "भाभी बहुत दिन हो गए आपके हाथ का कुछ खाये।"

"अरे यार मैं कुक थोड़ी हूँ। इतना ही खाने का मन है तो चले जाओ होटल खा लो जी भर।"

शेफाली लगातार बोलती जा रही पर अतुल...वो अपने ही खयालों में गुम था। नम्रता का मासूम चेहरा उसकी आँखों के सामने से गुजर गया। दिन भर परिवार के लिए जीती और जूझती अचानक से वह उसे खूबसूरत लगने लगी थी। वर्षों पहले शेफाली के साथ जीवन बिताने का सपना तो कब का चूर–चूर हो चुका था पर ईश्वर ने उसकी झोली में जो अनमोल उपहार के रूप में नम्रता को डाला था, वो उसकी कदर भी न कर पाया। नम्रता ने तो सिर्फ उसकी आँखों में अपने लिए विश्वास और प्यार ही तो चाहा था और वो उसे भी न दे पाया। अतुल काम का बहाना करके शेफाली के केबिन से बाहर निकल आया। आज वर्षों बाद उसने अपना टिफिन खोला। नम्रता के हाथों का बना लड्डू बड़ी उम्मीद से उसे देख रहा था। अतुल ने वो लड्डू मुँह में डाल लिया। उसके चेहरे पर एक मीठी सी मुस्कान थी। आज उसे अपने पापा की पसन्द पर गर्व हो रहा था। ❑

डॉ. रंजना जायसवाल
लाल बाग कॉलोनी छोटी बसही
मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश–231001

Me and My Students During Covid–19

That was 14 March 2020, when suddenly schools got closed due to pandemic covid-19 and soon after that unexpectable lockdown begins. Locking in our homes, I missed something like School environment and bonding with my students because that were not the scheduled holidays like summer vacations or winter vacation. Also had the thought in mind that what will happen about the regularity and practice in regard of a students' education.

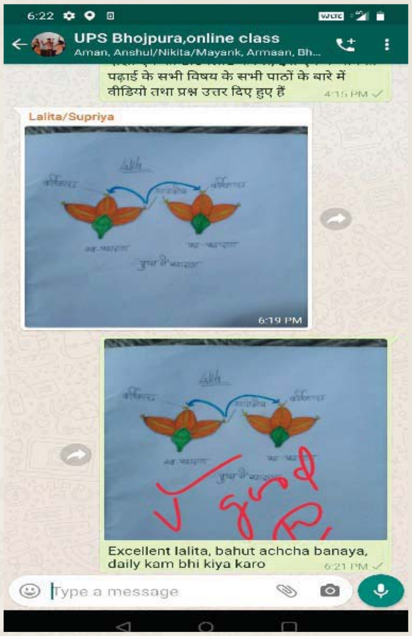

So, an idea comes to my mind to link with my students virtually. I shoot a video giving message for all students that how can they continue their bonds with their study and their teachers and then post it publicly on Facebook and YouTube. Then I made a WhatsApp group for online interaction with students.

I was just excited to initiate the online teaching learning class for Students, perhaps very first in basic Education department and very soon many students were added to my WhatsApp group of study by their parents and guardian number. I made a proper time table for the online class including class of art and craft, Man ki baat to listen their problems and writing poem and stories, craft , science experiments, mathematical calculations and students actively participated in many activities, quizes, competition and daily subject homework. They learned to make videos confidently and do yoga.

It was a little harder to convince Students in beginning and bring them on track of online learning because they and their parents are unaware about the importance of education in their lives, not only for being successful but also to live daily life properly. But a little time it's all ok, having a bond between me and students and with their studies also. Some of my students participated in state level child development program named "TEJAS", organised by Foster and forge Foundation, which was for developing their confidence level, self belief, their creativity and to make them linked with environment. And the students was praised for their activities. Student makes videos confidently, they make many posters about nature, about mother's day, and women's day, Earth day etc. They make nest and water pots for birds, they do plantation, they made seed bombs for germination this rainy season, and many craft items. Beside this did science activities and experiments and send me online.

Time to time I group called them by WhatsApp voice call or video call and interact directly with their problems. They happily shared with me their experiences and happiness to be involved in online teaching learning process. I am so happy to see my students developing like this digitally.

The most important reason for the successful implementation of my online teaching plan is the bonding with my students.

All I experienced was very good but if it talk about negative experience then I feel a little obstacle in this growing technique of online teaching learning process especially with rural students. As most of the parents does not have smart phones and those who have the smart phones, not all have of good quality. Most of them have jio phones which they bought in 1400/Rs and many students shared with me this type of problems like- ma'am the videos which you are sending to us are not downloading properly and we are not able to see them and answering the questions. Availability of phones to students is an essential need for the success of online teaching learning process. But I tried to overcome this problem and said to students that they can see the videos and do the homework & other creativities with their neighbours or friends when the phones available to them. And also tried to convince the students to support and help their friends who have no phones.

I faced another challenge as not all students have phones on same time because their parents or guardians go out of homes for some work and phones remains with them. So I free up this type of students that they can work at the time according to their availability of phones.

But above all, Problems doesn't matter because they are part of every good work and we have to rise up leaving those problems behind. It was not so easy how to prepare rural students for this but it is a great pleasure for me to initiate online teaching learning technique. Education oficers of my district praised me and instructs other teachers to follow this and soon it's become a compulsory track for the benefit of students.

During lockdown time, students made mask and distribute them in village and also aware villages about prevention from covid-19 through some posters .

They participated in a lot of competitions and got too many certificates also. One of my student "Lalita" got place in top 100 selections in UDAAN PRATIYOGITA by Basic Education Department.

I organised online exam on Zoom meeting app, in which many student appeared online. For this first I made them to learn about how to use zoom app. Remaining students give exam on whatsApp group, and to others who have no phones, we distributed worksheets at home. The objective of exam is not to evaluate the students, but to

make the students one step more stronger on digital platforms.

Students were watching educational programmes on Doordarshan. And they are able to watch videos through the link which we get daily as e content from basic education department, which I regularly sending in my online teaching learning whatsApp group, and listen the audio of aaoangrejisikhe program.

During covid period a team of students in my guidance participated in some national and international projects about environment in which students learns about making compost, about types of insects and leaves, about conservation of biodiversity segregation of waste and about waste management. In one of which we won state level earthianparyavaranmitra award continuously third time. The results of others are awaited.

Then the e–pathshala phase 2 started by our department with the positive way of reaching to every student either they have smart phones or not using both online and ofline mode.

I am happy to say that most importantly students and the parents are well satisfied with me. And really very happy, excited to continue my online class now also and my students are so excited and actively participated in each and every activity of the group.

Besides the focus on the education, we also tried to maintain our school circumstances more better, so that when students will attend the school can found it a good and comfortable place for their learnings and development. We painted school well, request CDO madam for the school boundary wall and have it, decorate classes with learning materials, made some small gardens in school campus etc.

We all know covid-19 will leave many negative effects to our country but some positive thing it gives us direction in the form of digital teaching learning in government school also. Hope for the best in education field, for our students future and for our country after covid-19. ❑

Meenakshi Pal
Assistant Teacher,
U.P.S. Bhojpura, Mainpuri (UP)

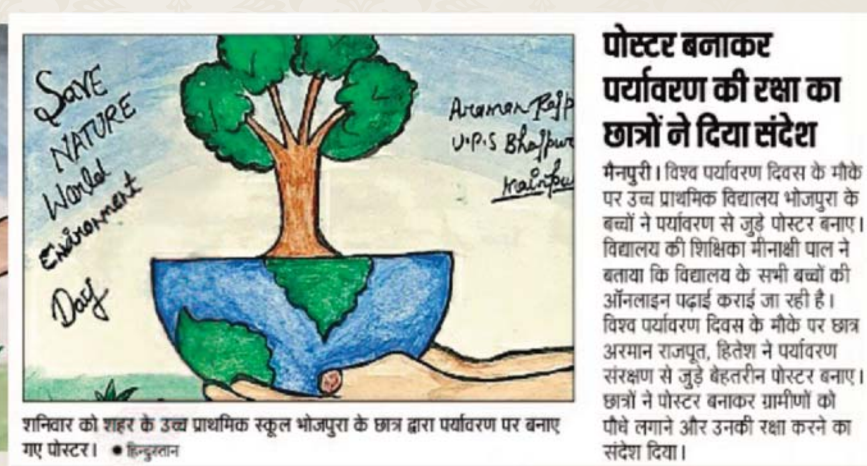

पोस्टर बनाकर पर्यावरण की रक्षा का छात्रों ने दिया संदेश

मैनपुरी। विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर उच्च प्राथमिक विद्यालय भोजपुरा के बच्चों ने पर्यावरण से जुड़े पोस्टर बनाए। विद्यालय की शिक्षिका मीनाक्षी पाल ने बताया कि विद्यालय के सभी बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई कराई जा रही है। विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर छात्र अरमान राजपूत, हितेश ने पर्यावरण संरक्षण से जुड़े बेहतरीन पोस्टर बनाए। छात्रों ने पोस्टर बनाकर ग्रामीणों को पौधे लगाने और उनकी रक्षा करने का संदेश दिया।

शनिवार को शहर के उच्च प्राथमिक स्कूल भोजपुरा के छात्र द्वारा पर्यावरण पर बनाए गए पोस्टर। ● हिन्दुस्तान

सुर्खियों में बेसिक शिक्षा

राष्ट्रीय क्षितिज पर कन्नौज के नवाचार का 'कल

प्रशांत कुमार • कन्नौज

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली (एनसीईआरटी) ने प्राथमिक विद्यालय की कक्षा एक की हिंदी की पुस्तक 'कलरव' में कन्नौज के एक स्कूल के शैक्षिक नवाचार को स्थान दिया है। गीली मिट्टी से विभिन्न कलाकृतियों से अक्षर और चित्र बनाकर बच्चों को वर्णमाला का ज्ञान देने की यह पद्धति परिषद को खूब भायी। पाठ्य पुस्तक में जिले को स्थान मिलना बड़ी उपलब्धि है।

बुनियादी शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाने के लिए शैक्षिक नवाचारों को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाता है। इसमें देश भर के

> एनसीईआरटी द्वारा प्राथमिक विद्यालय कल्यानपुर के शैक्षिक नवाचार को कक्षा एक की हिंदी की पाठ्यपुस्तक 'कलरव' में शामिल किया गया है। कन्नौज के लिए यह गौरव की बात है। इससे पूरे प्रदेश के बच्चों को प्रेरणा मिलेगी।
> केके ओझा, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी

एनसीईआरटी के पाठ्यक्रम में शामि
• स्रोत : बेसिक शिक्षा विभाग

शैक्षिक नवाचारों को पॉवर प्वाइंट प्रेजेंटेशन (पीपीटी) के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है। बेसिक शिक्षा विभाग के जिला समन्वयक (बालिका शिक्षा) राहुल द्विवेदी ने बताया कि देश भर में पाठ्यक्र... निर्धारण एनसीई...

आकृतियों के माध्यम से वर्णमा... अक्षर तथा विभिन्न कलाकृतियों के ... से सीखने की पद्धति विकसित क... बच्चों के लि...

2 दैनिक जागरण लखनऊ, 22 मार्च, 2021

परिषदीय स्कूलों की परीक्षा में होगा 'डिजिटल लर्निंग' का इम्तिहान

कसौटी पर **ऑनलाइन शिक्षा** इसी माह होंगी वार्षिक परीक्षा

राज्य ब्यूरो, लखनऊ : कोरोना महामारी के कारण साढ़े ग्यारह महीने बंद रहने के बाद खुले परिषदीय स्कूलों में 25 व 26 मार्च को होने जा रही वार्षिक परीक्षा में असल इम्तिहान तो डिजिटल लर्निंग का होगा जिसके माध्यम से बेसिक शिक्षा विभाग बंदी के दौरान बच्चों की पढ़ाई करा रहा था। वार्षिक परीक्षा के नतीजे बताएंगे कि कोरोना काल में परिषदीय स्कूलों के बच्चों को पढ़ाने के लिए अख्तियार किया गया यह तरीका

25 और 26 मार्च से परिषदीय स्कूलों में होने जा रही है वार्षिक परीक्षा

गए। एक तरह से देखा जाए परिषदीय स्कूलों के बच्चों को सत्र में क्लासरूम टीचिंग के न के बराबर समय मिला। तौर पर इस सत्र में पढ़ाई के बच्चे डिजिटल लर्निंग माध्यमों निर्भर रहे।

परिषदीय विद्यालयों के खुल चंद दिनों बाद ही बच्चों की परीक्षा होने जा रही है। परीक्ष मकसद बच्चों के शैक्षिक स्त आकलन करना है। यह बात

उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा 25 जुलाई को

राज्य ब्यूरो, लखनऊ : उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा (यूपीटीईटी)-2020 इस साल 25 जुलाई को आयोजित होगी। परीक्षा दो पालियों में होगी। सुबह 10 से दोपहर 12:30 बजे तक होने वाली पहली पाली में प्राथमिक स्तर की परीक्षा होगी। दोपहर 2:30 से शाम ... बजे तक दूसरी पाली में उच्च

11 मई को विज्ञापन, ऑनलाइन आवेदन के लिए रजिस्ट्रेशन 18 से

03 जून तक पूरा कर सकेंगे आवेदन, रिजल्ट 20 अगस्त को

आवेदन के लिए रजिस्ट्रेशन 18 मई की दोपहर से शुरू होगा। रजिस्ट्रेशन की अंतिम तारीख एक

विकसित किए जाएंगे स्कूल

प्रयागराज : परिषदीय स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक गुणवत्ता बेहतर करने के लिए निरंतर प्रयास हो रहे हैं। इसी क्रम में मिशन प्रेरणा के तहत रीड एलांग कार्यक्रम संचालित किया जा रहा

चाचा-भतीजे के बीच बंट जाती थीं भर्तियां

मुख्यमंत्री ने कहा, तार-तार हो गई थी भर्ती **आयोगों की छवि** जातिवाद और पैसा था नौकरी का आधार

271 ... भ्रष्टाचार में लड़खड़ा जाते हैं पैर

नौकरियां देने के साथ तलाश लेते थे बहन-बेटियों के लिए वर

यूपी में चार अप्रैल तक बंद कक्षा आठ तक के स्कूल

राज्य ब्यूरो, लखनऊ : कोरोना संक्रमण ने फिर शासन की चिंता बढ़ा दी है। जांच बढ़ाने व निगरानी समितियों को और अधिक सक्रिय करने के साथ ही फैसला किया गया है कि होली पर कक्षा आठ तक के जो स्कूल 31 मार्च तक के लिए बंद किए गए थे, वह अब रविवार यानी चार अप्रैल तक बंद रहेंगे। वहीं, अन्य शैक्षिक संस्थान कोविड प्रोटोकॉल के सख्ती ...

टीका लगवाने के लि... कर्मियों को भी अवका...

टीकाकरण के लिए जो लक्ष... है, उसकी तुलना में जनता में जागरुकता कुछ कम नजर रही है। अब टीकाकरण की ... बढ़ाने के लिए सरकार ने न... तरीका सोचा है। ...

राज्य ब्यूरो, लखनऊ : कोरोना के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए मुख्यमंत्री ने प्रदेश में कक्षा आठ तक के सभी सरकारी, सहायताप्राप्त और निजी स्कूलों को 11 अप्रैल तक बंद रखने का निर्देश दिया है, लेकिन प्रशासनिक कार्यों के लिए शिक्षक स्कूल आते रहेंगे। बेसिक शिक्षा विभाग ने शासनादेश भी जारी कर दिया है।

तक के स्कूल भी 11 अप्रैल तक बंद किए जा सकते हैं। शनिवार को इस संबंध में निर्णय होने की उम्मीद है। उप मुख्यमंत्री डॉ. दिनेश शर्मा ने बताया कि माध्यमिक शिक्षा विभाग ने प्रदेश में कक्षा नौ से 12 तक के सभी सरकारी, सहायताप्राप्त और निजी विद्यालयों को 11 अप्रैल तक बंद करने की मुख्यमंत्री से सिफारिश

समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री ने कोविड अस्पतालों की बहाली की रिपोर्ट देने को कहा। उन्होंने कहा कि एल-2 तथा एल-3 अस्पतालों की संख्या बढ़ाई जाए। लखनऊ, कानपुर नगर, मेरठ, वाराणसी, प्रयागराज, गाजियाबाद और आगरा जिलों में विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश देते हुए इन जिलों में एल-2, एल-3 अस्पतालों में बेड की

'अध्यापकों से अध्यापन कार्य

विधि संवाददाता, प्रयागराज : इलाहाबाद हाई कोर्ट ने महानिदेशक बेसिक शिक्षा उत्तर प्रदेश को निर्देश दिया है कि अध्यापकों से अध्यापन कार्य ही लिया जाय। अगर अतिरिक्त कार्य लेना जरूरी हो तो अध्यापन का काम प्रभावित किए बगैर लिया जाय। कोर्ट ने खेल, स्काउट आदि कार्य के लिए

हुए चुनौती दी गई थी कि वह खेल

कार्यमुक्त शिक्षकों का तबादला नहीं होगा निरस्त,

...ब्यू, लखनऊ : परिषदीय स्कूलों के शिक्षक अंतर जनपदीय तबादला होने के बावजूद नए स्कूल में कार्यभार ग्रहण करने में तरह-तरह के बहाने बना रहे हैं। ऐसे में बेसिक शिक्षा विभाग की विशेष सचिव डा. काजल की ओर से निर्देश जारी किए गए हैं कि ऐसे शिक्षक जो अंतर जनपदीय तबादले के तहत अपने स्थानांतरित जनपद वाले स्कूल के लिए कार्यमुक्त किए जा चुके हैं, उनका तबादला निरस्त नहीं किया जाएगा। उन्हें जिस जिले के जिस स्कूल में स्थानांतरित किया गया है, वहां ज्वाइन करना होगा।

कार्यमुक्त न हो पाने वालों को तीन माह का समय, परस्पर स्थानांतरण से इन्कार तो दोबारा मौका नहीं

ऐसे शिक्षक जो किन्हीं कारणों से अभी तक स्थानांतरण के बावजूद अपने मूल विद्यालय से कार्यमुक्त नहीं हो पाए हैं, उन्हें व्यक्तिगत ... पर तीन महीने का समय ... ग्रहण करने के लि...

उधर, परिषदी... जो पदावनत प्रा... कनिष्ठ शिक्षक...

होने से इन्कार कर रहे हैं, उनका स्थानांतरण तो रद कर दिया जाएगा, लेकिन उनको भविष्य में फिर दूसरे जिले में स्थानांतरण का अवसर नहीं दिया जाएगा। ऐसे शिक्षक जिन्होंने अंतर जनपदीय तबादले के लिए गलत जानकारी भरकर ज्यादा अंक हासिल किए, उनका तबादला निरस्त होगा और ... भी मांगा जाएगा। परिषदीय

कर दिया ... अंतर जनप... स्थानांतरण ... को कार्यमुक्... को कार्यमुक... रही है तो त... पारस्परिक स्... में से एक का ... हो गया है तो ... रद होगा। अग...

'ई-लर्निंग' का मिला अनूठा विकल्प

आशीष त्रिवेदी • लखनऊ

माध्यमिक शिक्षा विभाग ने वाट्सएप वर्चुअल क्लास शुरू की। बीते 20 अप्रैल 2020 को सरकारी माध्यमिक स्कूलों में वाट्सएप ग्रुप बनाकर ... पढ़ाई शुरू की गई ...

www.jagran.com

बिना परीक्षा दिए विद्यार्थी अगली कक्षा में प्रोन्नत

राज्य ब्यूरो, लखनऊ: मुख्यमंत्री के निर्देश पर परिषदीय विद्यालयों में 24 से 31 मार्च तक होली अवकाश घोषित कर दिया गया है और इनमें पढ़ रहे कक्षा एक से आठ तक के सभी बच्चे बिना परीक्षा दिए अगली क्लास में प्रमोट कर दिए गए हैं। परिषदीय स्कूलों में 1.6 करोड़ बच्चे नामांकित हैं। पहली अप्रैल से परिषदीय स्कूलों में नया शैक्षिक सत्र शुरू होगा।

महानिदेशक स्कूल शिक्षा विजय किरन आनंद ने मंगलवार को इस बारे में सभी जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों को निर्देश ...

परिषदीय विद्याल...

- स्कूलों में 24 से 31 मार्च त... का अवकाश घोषित
- 1.6 करोड़ बच्चे नामांकित, प... अप्रैल से शुरू होगा नया सत्र

विवि व कालेजों में 31 मा... तक आनलाइन कक्षाएं

राज्य ब्यूरो, लखनऊ : प्रदेश के विश्वविद्यालय व डिग्री कालेजों में 25 मार्च से 31 मार्च तक आनलाइन कक्षाएं ही चलेंगी। ...

चयनित अभ्यर्थियों को परेशान करना बीएसए को पड़ेगा महंग...

राज्य ब्यूरो, लखनऊ : परिषदीय स्कूलों में शिक्षकों के ... हजार रिक्त पदों पर चल रही भर्ती प्रक्रिया में अभि... सत्यापन के नाम पर चयनित अभ्यर्थियों को परेशान ... जा रहा है। कई जिलों में बेसिक शिक्षा अधिकारी (बीए...

69 हजार शिक्षकों की भर्ती का सभी जिलों से मांगा ब्योरा

शासन द्वारा उनकी श... का निवारण किए ज... बावजूद सत्यापन के ... अभ्यर्थियों को दौड़ा... ऐसे में किस जिले में ... में कितने पद खाली हैं, इसका ब...

शिक्षकों के वेतन भुगतान में नहीं होगी देर

राज्य ब्यूरो, लखनऊ : बेसिक शिक्षा विभाग के अधीन परिषदीय शिक्षकों और शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को अब वेतन मिलने में विलंब नहीं होगा। परिषदीय शिक्षकों और बेसिक शिक्षा विभाग के शिक्षणेत्तर कर्मचारियों का वेतन हस्तांतरण अब मानव संपदा पोर्टल के पे-रोल मॉड्यूल के जरिये होगा। पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर इसे राजधानी के बख्शी का तालाब ब्लॉक में लागू किया गया है। महानिदेशक स्कूल शिक्षा विजय किरन आनंद ने बताया कि मानव संपदा के पोर्टल पर पे-रोड मॉडयूल के जरिये वेतन हस्तांतरण की प्रक्रिया शासन के विचाराधीन है।

WEL COME
To our
SCHOOL

WEL COME
To our

हम बनाएंगे
प्रेरक प्रदेश

मिशन प्रेरणा

उत्तर प्रदेश, प्रेरक प्रदेश

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, 257–गोलागंज, लखनऊ